GOVERNMENT OF INDIA
NATIONAL LIBRARY, CALCUTTA

Class No. H
954
Book No. Si 965
N. L. 38.
MGIPC—S1—36 LNL/60—14-9 61—50,000

॥ इतिहासतिमिरनाशक ॥

ITIHAS TIMIRNÁSAK.

HISTORY OF INDIA;

IN THREE PARTS.

BY RÁJÁ SIVA PRASAD, C.S.I.;

Fellow of the University of Calcutta, and late Inspector, 2nd Circle, Department Public Instruction, North Western Provinces and Oudh.

तीन हिस्सों में

मुताबिक़ हुक्म जनाब नव्वाब लफ़्टिनेंट गवर्नर बहादुर ममालिक शिमाल व मग़रिब और चीफ़ कमिश्नर अवध

राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द (३) ने बनाया

पहला हिस्सा

PART I.

इलाहाबाद-सर्कारी छापेख़ाने में छापा गया ॥

वही

लखनऊ

मुंशी नवल किशोर के छापेख़ाने में छपा

दिसंबर सन् १८८६ ई०

इसपुस्तकका कापीराइट महफ़ूज़ है व हक़ इसके छापने का

1st edition, 3,600 copies. Price per copy, 3 as. 6 pies.

पहली बार ३६०० पुस्तकें मोल फ़ी पुस्तक ≡)६ पाई

॥ इतिहास तिमिरनाशक ॥

ITIHÁS TIMIRNÁSA'K.

HISTORY OF INDIA,

IN THREE PARTS,

BY RAJA SIVAPRASAD, C.S.I.,

Fellow of the University of Calcutta, and late Inspector, 2nd Circle, Department Public Instruction, North-Western Provinces and Oudh.

तीन हिस्सों में

मुताबिक़ हुक्म जनाब नव्वाब अनरबल लेफ़्टिनेंट गवर्नर बहादुर ममालिक शिमाल व मग़रिब और चीफ़ कमिश्नर अवध

राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द (३) ने बनाया

पहला हिस्सा

PART I.

इलाहाबाद-सरकारी छापेख़ाने में छापा गया ॥

वही

लखनऊ

मुंशी नवल किशोर के छापेख़ाने में छपा

दिसंबर सन् १८८६ ई०

"Our Schools and Universities are extending the idea of scientific method. Read carefully that extract from Rájá Sivaprasád's Book I. quoted in the *Contemporary* for September. That man, at least, has obviously got hold of the scientific view of history."

M. E. GRANT DUFF.

The Contemporary Review, November 1875.

इत्तिला

जो लफ़्ज़ फ़ारसी हर्फ़ों के सबब आइने तारीख़नुमा में दूसरी तरह पर लिखे हैं उनके नीचे लकीर खींच दी है और फ़िहरिस्त आगे लिखी है.—

इतिहास तिमिर-नाशक में	आइने तारीख़-नुमा में	इतिहास तिमिर-नाशक में	आइने तारीख़-नुमा में
इतिहास ..	तवारीख़	शरण ..	पनाह
राजधानी ..	दारुस्सल्तनत	शरणागत ..	पनाहगीर
सेनापति ..	सिपहसालार	वायुकोण ..	गोशे शिमाल व मग़रिब
गर्भ ..	हमल		
दुखदायी ..	मूज़िर	बिदा ..	रुख़्सत
प्रायद्वीप ..	जज़ीरानुमा	साक्षात ईश्वरका कोप	हूबहू क़हरे ख़ुदा
माया .	क़ुदरत		
द्वारपाल ..	दर्बान	भगवान ..	ख़ुदा
क्या महिमा है सर्व शक्तिमान जगदीश्वर की	क्या क़ुदरत है ख़ालिक़ बरहक़ और क़ादिरमुतलक़ की	साम दान भेद दंड	फ़ाइदा नुक़्सान भला बुरा
		पुष्पपुच्छ ..	गासनशीन
प्रलय का सा दुंद	क़यामत का सा हंगामा	निराकार जगदीश्वर ..	बेचून व चरा ख़ालिक़ अर्ज़ व समा
		दुहनी—नतनी	नवासी
असार संसार ..	नापायदार दुनया	परलोक ..	इन्तक़ाल
संक्षेप ..	इख़्तिसार	विधाता का लेख	क़ज़ा का हुक्म
पाप ..	गुनाह		

NATIONAL LIBRARY
NO. 10177
DATE 4·7·60
CALCUTTA

PREFACE.

I was not fully aware of the difficulty of my task when I promised to prepare a little work on the History of India in Hindí and Urdú for the use of our village schools. I knew how imperfect and full of errors the so-called histories are which have hitherto been written in the Vernacular, but I had not imagined for a moment that even so cautious a writer as Elphinstone was liáble to commit such mistakes as to say that Fíroz Tuglak̤ was nephew of the "late King" (Muhammad Tuglak̤), when Dow calls him "his cousin;" or that Násir-ud-Dín Mahmúd was the grandson of "Altamsh" (correctly Altimash), when he was in fact his son; or that "Altamsh" was purchased for 50,000 pieces of *silver*, when only 50,000 chítals were paid for him, 50 of which make a ṭanka or rupee of that time. Or that a talented author like Mr. Marshman would forget the topography of the country so far as to write that "the greatest achievement of this (Fíroz Tuglak̤'s) reign was the canal from the *source of the Ganges* to the Sutlej, which still bears his name" (History of India, Serampore, 1863, page 65). He calls "Raja Jey Sing of Jeypore and Raja Jesswunt Sing of Joudhpore" "Mahratta Generals," and gives the name of Muhammad Sháh "Rustum Khan," instead of Roshan Ak̤htar! (pages 166 and 189 respectively). There is no room to disprove here his assertion that "Akbar made the settlement with the cultivators *themselves*, to the exclusion of all middlemen." Having thus no English book that would completely answer my purpose, I was obliged to have recourse to original Persian works. But Benares is not a place where Persian books can easily be procured, and there was no time to procure them from other quarters, so I was obliged to make the best of the means at my disposal. The difficulty of correcting Indian names written in Persian is rather greater than those written in English. Sunárgánv, for instance, is written Sitárgánv, Chaṭgánv (Chittagong), Jebgánv, and so on, in the lithographed copy of Farishta!

My plan is to divide my book into three parts. In the first I give an outline of the Hindú and Muhammadan periods; in the second I relate the rise and growth of the British Empire up to 1858; and in the third I treat of the changes in manners and customs from the earliest ages, when our ancestors were drinking the exhilarating soma juice on the banks of the Sarasvatí, and of the revolutions in

laws and religions. I compare former governments and the British rule, and the state of society, and the general prosperity of the country under both. My endeavour is in this part to prove to my countrymen that, notwithstanding their very strong antipathy to "change," they *have* changed, and *will* change; that, notwithstanding the many heroic actions ascribed to our ancient Hindú Rájás, there was no such thing as an empire in existence; that the country was divided between numerous chiefs always fighting with each other for temporary superiority; that, notwithstanding the splendour attributed to Muhammadan dynasties, the country was sadly misgoverned, even during the reigns of the most powerful Emperors; and that, although the diamonds and pearls were weighed by "maunds" in the royal treasuries, the people in general were very poor and utterly miserable.

I may be pardoned for saying a few words here to those who always urge the exclusion of Persian words, even those which have become our household words, from our Hindí books, and use in their stead Sanskrit words, quite out of place and fashion, or those coarse expressions which can be tolerated only among a rustic population. The sister presidencies will sympathize with us when they remember that we are not blessed like them in having the same language and character for the Court and the community. Our Court language is Urdú, and the Court language has always been regarded by all nations as the most fashionable language of the day. Urdú is now becoming our mother-tongue, and is spoken, more or less, and well or badly, by all in the North-Western Provinces. If we cannot make the Court character, which is unfortunately Persian, universally used to the exclusion of Devanágarí, I do not see why we should attempt to create a new language. Persian words such as Átish, Ma'rúf, Shitáb, Zambúr, Sardár, Koh, &c., have been used by our first Hindí author (as I at least regard him) Chand, the famous bard of Prithíráj; and I think it is better for us to try our best to help the people in increasing their familiarity with the Court language, and in polishing their dialects, than to make them strangers to the Courts of the districts and ashamed when they talk before the higher classes.

BENARES:
1st January, 1864.

ŚIVA PRASAD.

॥ इतिहास तिमिरनाशक ॥

पहला हिस्सा

क्या ऐसे भी आदमी हैं जो अपने बाप दादा और पुरखाओं का हाल सुनना न चाहें। और उन के ज़माने में लोगों का चाल चलन बेवहार बनज बेवपार और राज दर्बार किस ढब बर्ता जाता था और देस की क्या दसा थी कब कब किस किस तरह कौन कौन से राजा बादशाहों के हाथ आये किस किस ने कैसा कैसा इन पर ज़ोर ज़ुल्म जताया और कौन कौन से ज़माने के फेर फार कहां कहां इन्हें झेलने पड़े कि जिन से ये कुछ के कुछ बन गये इन सब बातों के जानने की ख़ाहिश न करें॥ बाप दादा और पुरखा तो क्या हम इस इतिहास में उस वक़्त से लेकर जिस से आगे किसी को कुछ मालूम नहीं आज तक अपने देस का हाल लिखने का मंसूबा रखते हैं ज़रा दिल दो। और कान धरकर सुनो॥

जानना चाहिये कि हिंदुस्तान में सदा से हिंदू का राज सूर्य-वंशी और चन्द्रवंशी घरानों में चला आता है पहला सूर्यवंशी राजा वैवस्वत मनु का बेटा इक्ष्वाकु था। राजधानी उसकी अयोध्या॥ उस से पचपन पीढ़ी पीछे उस वंश के सिरताज रामचन्द्र हुए। बाप का हुक्म मान चौदह बरस बन में रहे॥ इक्ष्वाकु की बेटी इला चन्द्र के बेटे बुध को ब्याही थी इसी का बेटा पुरूरवा प्रयाग के साम्हने प्रतिष्ठानपुर में जिसे अब झूसी कहते हैं पहला चन्द्रवंशी राजा हुआ। महाभारत यानी कुरुक्षेत्र की भारी लड़ाई में अपने चचेरे भाई हस्तिनापुर के राजा दुर्योधन को मारने पर जब महाराज युधिष्ठिर जो पुराणों के मत बमूजिब पुरूरवा से पैंतालीसवीं पीढ़ी में पैदा हुए थे अपने भाइयों के साथ

इन्द्रप्रस्थ यानी दिल्ली का राज छोड़कर हिमालय को चलेगये उन के भाई अर्जुन का पोता परीक्षित गद्दी पर बैठा और परीक्षित से लेकर छब्बीस पीढ़ी तक उसी के घराने में राज रहा॥ छब्बीसवीं पीढ़ी में राजा क्षेमक ऐसा ग़ाफ़िल और पस्तहिम्मत हुआ। कि उस का मंत्री उसे मारकर आप युधिष्ठिर की गद्दी पर बैठ गया॥ इस के घराने में चौदह पीढ़ी राज रहा। फिर जिस तरह आया था उसी तरह दूसरे घराने में चला गया और सोलह पीढ़ी पीछे तीसरा घराना मुल्क का मालिक हुआ॥ निदान उस को भी नवीं पीढ़ी में राजा राजपाल ने अपने घमंड और बद मिज़ाजी से रअ़य्यत और सिपाह को नाराज़ किया। तब कमाऊं के राजा सुखवंत ने आकर राजपाल को मार डाला और इन्द्रप्रस्थ ले लिया॥ लेकिन महाराज विक्रम ने उस को भी गद्दी से उतारा। और मुल्क पर अपना क़ब्ज़ा किया॥ इधर तो ये लोग एक के पीछे एक अपने नाम का डंका बजाते गये। और उधर मगध देस में जरासंध के पीछे जिसे कृष्ण की मदद से युधिष्ठिर के भाई भीम ने उस की राजधानी राजगृह में मारा था उस की औलाद के राजा बाईस पीढ़ी तक राज करते रहे॥ आख़िरी राजा रिपुंजय को उस के मंत्री सुनक ने मारकर सारा राज छीन लिया। इस अगले ज़माने की कोई तवारीख़ यानी इतिहास की पोथी ऐसी मुऽतबर नहीं है कि जिस से उस वक़्त का हाल मुफ़स्सल और सिल्सिलेवार मालूम होसके इस लिये अब हमने सिकन्दर के ज़माने से कुछ ख़बरों का लिखना शुरू किया॥

पच्छमवालों की चढ़ाइयों का हाल जो पतेबार मिलता है। वह यह है॥ कि सन् ईसवी से ३३१ बरस पहले यूनान के बड़े बादशाह सिकंदर ने ईरान के बादशाह दारा को जीतकर इस मुल्क पर चढ़ाई की उस वक़्त मगध देस का राज चार पीढ़ी तक सुनक के घराने में रहकर तक्षक यानी नागवंश में आ गया था। इन नागवंशी राजाओं ने दस पीढ़ी तक राज किया आख़िरी राजा इस वंश का महानंद था॥ उस ज़माने में सारे हिन्दुस्तान के दर्मियान बौद्धमती फैल गये थे। ख़ाली कहीं २

काशी कन्नौज ऐसे शहरों के रहनेवाले वेद की रीति पर चलते थे॥ फ़ारसी किताबों में लिखा है कि सिकंदर कन्नौज तक आया था। लेकिन यह बात निरी झूठ और बे असल है उसी के साथियों ने अपनी यूनानी किताबों में लिखा है कि वह सतलज के किनारे से आगे नहीं बढ़ा॥ सिकंदर एक लाख बीस हज़ार फ़ौज के साथ सिंधनदी पर पुल बांधकर पार उतरा था। लेकिन झेलम के इस पार कुल ग्यारह हज़ार सवार लाया॥ कोहिस्तान और सिंधसागर दुआब के सब राजाओं ने उसकी इताअत क़बूल की लेकिन पंजाब का राजा जो शायद पुरु या पुरु के वंश में था. क्योंकि यूनानी उस का नाम पोरस लिखते हैं उस से लड़ने को तय्यार हुआ। और झेलम के इस पार तीस हज़ार पेदल चार हज़ार सवार और बहुत से हाथी लेकर सिकंदर से लड़ा॥ तीन पहर तक बड़ी लड़ाई रही। आख़िर राजा की फ़ौज शिकस्त खा कर भागी। लेकिन राजा तब भी नहीं हटा। अपने हाथी पर मैदान में डटा रहा॥ सिकंदर उस की बहादुरी देखकर बड़े अचंभे में आया। और कहला भेजा॥ कि अगर अब भी हमारे पास चला आवे। तो तेरी जान बख़्शी जावे और इज़्ज़त हुर्मत में फ़र्क़ न पड़ने पावे॥ राजा ने इस बात को सुनकर क़बूल किया। और निडर सिकंदर के पास चला आया॥ सिकंदर ने उस से पूछा कि हम तुम्हारे साथ क्योंकर पेश आवें राजा ने जवाब दिया कि जैसे बादशाह बादशाहों से पेश आते हैं सिकंदर उस का यह दिल और दिलेरी देखकर बहुत ख़ुश हुआ और तमाम मुल्क उसका उसी को बख़्शा। बल्कि कुछ थोड़ा सा और भी अपनी तरफ़ से दिया॥ इस के बाद सिकंदर सतलज के किनारे पर आया। लेकिन फ़ौज बहुत थक गयी थी बरसात का मौसिम आजाने के सबब सिपाहियों ने आगे बढ़ने से इन्कार किया॥ तब नाचार सिकंदर वहां से उलटा फिर गया। कहते हैं कि उस वक़्त मगध देस के नागवंशी बड़े नामी राजा महानंद के पास छ लाख पियादे बीस हज़ार सवार और नव हज़ार हाथी थे क्या जानें इन्हीं का दबदबा सिकंदर को यहां से फेर ले गया॥ निदान महानंद अपने मंत्री के हाथ से मारा गया।

उस के आठ बेटों ने मिलके बारह बरस राज किया। तब नवें चन्द्रगुप्त ने जो नायन के पेट से पैदा हुआ था चाणक्य ब्राह्मण की मदद से अपने सब भाइयों को मार सारा राज अपने क़ब्ज़े में कर लिया। और बड़ा इक़्बालमंद हुआ उस ने बाबिल के यवन बादशाह सिल्यूकस * की बेटी से ब्याह किया। दस पीढ़ी तक यह राज उसी के घराने में रहा। हिंदुओं के शास्त्र में लिखा है कि हिंदुस्तान में अधर्म यानी बौद्धमत फैला हुआ देखकर ब्राह्मणों ने अर्बुदगिरि पर जिसे आबू का पहाड़ कहते हैं एक अग्निकुण्ड रचा और वहां देवताओं ने आप आकर चार मूरतें उस कुण्ड में डाल दीं उन से अग्निकुल के चार क्षत्री यानी प्रमर या परमार जिन्हें पंवार भी कहते हैं चौहान सोलंकी और परिहार पैदा हुए इस बात से ऐसा मालूम होता है कि शायद उन ब्राह्मणों ने चार आदमियों को शास्त्र के संस्कारों से द्विजन्मा किया था यानी उन का नया जन्म मानकर उन्हें असली क्षत्री बना लिया था॥ उन में से प्रमर गोत्रवाले यानी पंवार बहुत बढ़े। और एक ज़माने में सारे हिंदुस्तान के राजा हो गये॥ इन अग्निकुलों ने बौद्धमतवालों को मारमारकर निकालना शुरू किया। और ब्राह्मणों का मत फिर फैला दिया। इसी प्रमर वंश में सन् ईसवी † से सत्तावन बरस पहले राजा विक्रम उज्जैन की राजगद्दी पर बैठा इसे वीरविक्रमादित्य भी कहते हैं। और शक लोगों को जो तातार की तरफ़ से चढ़ आये थे शिकस्त देने के सबब उसे शकारि भी पुकारते हैं। यद्यपि वह ऐसा बलंद इक़्बाल और इतने बड़े मुल्क का मालिक महाराजाधिराज था कि आज तक उस का सम्बत चला जाता है। और वह परजन दुखभंजन कहलाता है। तोभी नित चटाई पर सोता। और अपने हाथ सिप्रा नदी से पानी का तूंबा भर लाता। इस में

---

* सिल्यूकस सिकंदर के सेनापतियों में से था सिकंदर के मरने पर बाबिल से इस तरफ़ सिंधु नदी तक सारा मुल्क दबा बैठा था॥

† ईसा मसीह के जन्म दिन से सन ईसवी गिना जाता है॥

शक नहीं कि उज्जेन के राजा विक्रमादित्य के वक़्त से लेकर मुसल्मानों की पहली चढ़ाई तक अक्सर नामी होते चले आये। लेकिन अंध्रवंश के राजा जिन की राजधानी मगधदेस में पाटलीपुत्र यानी पटना थी बहुत बड़गये थे॥ रूमवालों ने उन की बहुत बड़ाई लिखी है इस अंध्रवंश को एक शूद्र ने अपने मालिक कन्नवंश के आख़िरी यानी चौथे राजा को जो चन्द्रगुप्त का वंश नाश होने पर सुंगवंशी दस राजाओं के बाद हुआ मार कर क़ाइम किया था। कहते हैं कि राजा महाकर्ण इसी घराने में हुआ॥ उस की हिम्मत और सख़ावत की शुहरत आज तक चली जाती है। दीप दीप में उस की बड़ाई गायी जाती है॥ अंध्रवंश के आख़िरी राजा का नाम पुलोम था। यह पुलोम भी हिन्दुस्तान का बड़ा नामी राजा हुआ॥ और उसके राजकाज का चर्चा चीन तक पहुंचा। आख़िरी वक़्त में वह आप से आप गंगा में डूब मरा॥ फिर उसका सेनापति रामदेव गद्दी पर बैठा। समुद्र के कनारे से कश्मीर तक सब राजा उस के ताबे थे जब वह मरा तो उस का भी सेनापति प्रतापचन्द्र राजा हुआ॥ उसी के ज़माने में ईरान के बादशाह नौशेरवां का लश्कर हिन्दुस्तान पर चढ़ा था और जितना ख़राज इस मुल्क का बाक़ी पड़ा था सब प्रतापचन्द्र से दामदाम भर लेगया। नौशेरवां जिस का अदल इंसाफ़ आज तक मशहूर है सन् ५३१ ५३१ ई०
ईसवी में तख़्त पर बैठा था॥ प्रतापचन्द्र के मरने बाद उस के सारे सेनापति अपने अपने सूबे दबा बैठे। और जैसे नाऊ की बरात में जने जने ठाकुर जुदा जुदा राजा हो गये॥ इन सेनापतियों के राज को अंध्रभृत्यों का यानी अंध्र के नौकरों का राज कहते हैं। उस ज़माने में क्षत्रियों से राज बिल्कुल जाता रहा था ब्राह्मणों से लेकर शूद्र अहीर पहाड़ी और जंगलियों तक मगध प्रयाग मथुरा काशी कन्नौज वग़ैरः में ख़ुदमुख़्तार होकर राज करने लगे थे नौशेरवां के लश्कर ने उदयपुर के राजाओं की पहली राजधानी बल्लभापुर या वलभी

* को नाश कर डाला और राजा के वंश में किसी को जीता न छोड़ा ये राजा अपने तई रामचन्द्र के बेटे लव की औलाद में बतलाते हैं॥ ख़ाली एक रानी पुष्पावती वहां से बचकर भागी। और मलयगिरि की किसी खोह में जाकर छिप रही॥ रानी को गर्भ था। वहां उस के एक लड़का पैदा हुआ नाम उस का गोह रक्खा॥ वही लड़का ऐदर को जो वल्लभी और उदयपुर के बीच में है अपने क़ब्ज़े में लाकर वहां का राजा हुआ। और कहते हैं कि नौशेरवां की पोती † से ब्याह किया॥ गोह के बाद आठ राजा ऐदर की गद्दी पर बैठे आठवें राजा का छोटा लड़का जिस का नाम बापा था अपने बाप के मारे जाने पर भांडेर में भाग गया। और वहां गड़रियों में पलकर
७०० ई० सन् ७०० ई० के लग भग चित्तौड़ को चला आया और वहीं रहने लगा॥ उसी ज़माने में मुसल्मानों के पैग़म्बर मुहम्मद ‡ के मरने के बाद दूसरे ख़लीफ़ा उमर ने ईरान फ़तह करके कुछ फ़ौज हिन्दुस्तान की तरफ़ भेजी लेकिन उस का सेनापति पहली ही लड़ाई में मारा गया। फिर ख़लीफ़ा अली ने लश्कर भेजकर सिंधुनदी के कनारे का कुछ मुल्क फ़तह किया लेकिन अली के मारे जाने पर वह लश्कर उस मुल्क को आपही छोड़कर चला गया॥
७११ ई० सन् ७११ ई० में जब कि वलीद ख़लीफ़ा था मुसल्मानों के लश्कर ने बड़ी आफ़त मचायी सारा सिंध अपने क़ब्ज़े में कर

---

* गुजरात में भावनगर से २० मील पच्छिम वहां अब बले बसा है॥

† मआसिरुलउमरा और सिआरुलमुताख़िरीन दोनों तवारीख़ों में लिखा है कि जब ईरान का आख़िरी आर्य और अग्निहोत्री बादशाह यज़्दजुर्द अरब वालों से शिकस्त खाकर मारागया उस की बड़ी बेटी माहबानू भागकर हिंदुस्तान में चली आयी उसी की औलाद में उदयपुर के राना हैं यज़्दजुर्द नौशेरवां (नौशीरवां) के पोते का पोता था लेकिन नौशेरवां का पोता ख़ुसरवपर्वेज़ भी नौशेरवां कहलाया और उसने रूम के ईसाई क़ैसर मॉरिस की बेटी मर्यम से ब्याह किया था॥

‡ मुहम्मद सन् ५६९ ई० में पैदा हुए थे और मक्के से मदीने गये तभी से सन् हिजरी जारी हुआ॥

लिया। और बहुत राजाओं से ख़राज वसूल किया। उसी लश्कर के सेनापति क़ासिम का बेटा मुहम्मद तीन बरस बाद फिर हिंदुस्तान पर चढ़ा और गुजरात फ़तह कर के चित्तौड़ की तरफ़ झुका। लेकिन बापा से शिकस्त खाकर भागना पड़ा। बापा ने खंभात के हाकिम सलीम की लड़की से ब्याह किया और चित्तौड़ के पहले राजा को निकालकर आप वहां का राजा बन गया। फिर थोड़े ही दिन पीछे अपना मुल्क और मत छोड़कर ख़ुरासान की तरफ़ चला गया। सन् ८१२ ई० में ८१२ ई०
ख़लीफ़ा हारूंरशीद के बेटे मामूंरशीद ख़ुरासान के हाकिम ने एक बड़े लश्कर के साथ हिंदुस्तान में आकर चित्तौड़ पर चढ़ाई की उस वक़्त चित्तौड़ में बापा के पोते का बेटा राज पर था नाम उस का राजा खुमान था। उस से और मामूं से चौबीस लड़ाइयां हुईं लेकिन आख़िर मामूं शिकस्त खाकर हिंदुस्तान से भाग गया। इस के बाद सन् ९०० ई० में ९०० ई०
ख़ुरासान के बादशाह अमीर नासिरुद्दीनसुबुक्तिगीन * ने امیر ناصر الدین سبکتگین
हिंदुस्तान पर चढ़ाई की और पंजाब की सर्हद के कई क़िले फ़तह कर लिये यह ख़बर सुनकर लाहौर का राजा जयपाल ऐसा बिगड़ा कि अपनी फ़ौज सिंधुपार ले जाकर ख़ुरासान पर चढ़ दौड़ा। वहां अजब माजरा हुआ कि सुबुक्तिगीन से राजा ने शिकस्त खाकर उसे ख़राज देना क़बूल किया लेकिन जब वहां से छूटकर लाहौर में आया तो उस ने बादशाह को वह ख़राज नहीं भेजा। इसलिये सुबुक्तिगीन ने फिर पंजाब पर चढ़ाई की। राजा जयपाल भी दिल्ली अजमेर कालिंजर और कन्नौज के राजाओं की कुमक लेकर सिंधु पार उतरा और लमग़ान के पास जाकर सुबुक्तिगीन से लड़ा निदान फिर भी इसी की फ़ौज ने मुसल्मानों के लश्कर से शिकस्त खायी।

उस वक़्त उज्जैन और पाटलीपुत्र के राज को बिगड़े बहुत दिन हो चुके थे। और नये नये राजा हिंदुस्तान के जुदा जुदा मुल्क में राज करते थे। जब से महाराज विक्रम ने दिल्ली

* सुबुक्तिगीन और सिबुक्तिगीन दोनों दुरुस्त हैं॥

के राजा को दूर किया। तब से वह राज पांच सा बरस से ऊपर बिना राजा पड़ा रहा। यहां तक कि ज़माने के फेर से दिल्ली को तोमर राजाओं ने अपनी राजधानी बनाया। अनंगपाल तक इस घराने के इक्कीस राजा दिल्ली की राजगद्दी पर बैठे थे अनंगपाल ने अपने नाती * पृथीराज चौहान अजमेर वाले को गोद लिया। कन्नौज के राज पर राठौरों का क़ब्ज़ा था। मेवाड़ गोहलोतों के हाथ में था। गुजरात में सोलंकी राज करते थे। सिवाय इन के और भी बहुत से छोटे छोटे राजा थे अपने डेढ़ चावल की खिचड़ी जुदा ही पकाते थे। आपस की फूट से मुसल्मानों को यहां चले आना सहज हो गया। और देखते ही देखते सारा मुल्क दबा लिया।

सुल्तानमहमूदग़ज़नवी

سلطان محمود غزنوی

जब सुबुक्तिगीन मरा। तो उस के बेटे महमूद को तीसवां बरस था। सात महीने के अंदर अपने भाई इस्माईल को जो
९९७ ई० तख़्त पर बैठ गया था क़ैद करके आप बादशाह हुआ और सुल्तान अपना लक़ब रक्खा। सुल्तान अरबी ज़ुबान में बादशाह को कहते हैं उस से पहले यह लक़ब किसी बादशाह ने नहीं इख़्तियार किया था।

उस वक़्त फ़ारस वग़ैर: पच्छम देस की मुसल्मानी सल्तनतें ऐसी कमज़ोर पड़ गयी थीं। और आपस में लड़ाई झगड़ा रखती थीं। कि जो महमूद उधर को अपने लश्कर की बाग उठाता। समुद्र तक उसे कोई रोकनेवाला न था। पर हिंदुस्तान की दौलत और ज़र्ख़ेज़ी ऐसी मशहूर थी और दूसरे मज़हबवालों को ज़बर्दस्ती मुसल्मान बना लेना यह उस मज़हबवालों के नज़दीक उन दिनों नाम पैदा करने के लिये ऐसी एक बड़ी बात थी। कि महमूद सा होसिलेवाला इस अजीब बेनज़ीर मुल्क को छोड़कर कब किसी दूसरे पर दिल चलाता। भला अमृतफल छोड़कर वह कब इंद्रायन खाता।

* बेटी का बेटा यानी दुहीता।

ईरान में मुसल्मानों का दख़ल होने से कुछ ऊपर ३५० बरस बाद महमूद ने दस हज़ार चुने हुए सवार लेकर अपनी राजधानी ग़ज़नी से हिन्दुस्तान की तरफ़ कूच किया। १००१ ई०

पहला मुक़ाबला पिशावर के पास उस के बाप के पुराने दुश्मन लाहौर के राजा जयपाल से हुआ बादशाह ने फ़तह पायी राजा क़ैद में आगया। फिर महमूद ने सतलज पार होकर बटिंडे * के क़िले पर हल्ला किया। और उसे लेकर ख़ूब लूटा। तब तक बटिंडा बहुत आबाद और नामी मुक़ाम था। लाहौर का राजा वहां आकर अक्सर रहा करता था।

महमूद ने ग़ज़नी पहुंचने पर जयपाल से ख़राज देने का फिर नया क़ौल क़रार लेकर उसे क़ैद से ख़लास किया और उस के साथ और भी बहुत से हिन्दुओं को छुड़ौती ले ले कर बंद से छोड़ दिया। लेकिन जयपाल के जी में उस मुसल्मान के क़ैद की कुछ ऐसी ग़ैरत सी आ गयी कि छुटते ही राजपाट अपने लड़के अनन्दपाल को दे आप तुषानल यानी फूस की आग में जल मरा।

अनन्दपाल अपने बाप के क़ौल क़रार पर चला गया। और महमूद को जो कुछ कि ख़राज ठहरा था बराबर देता रहा। लेकिन उस के ज़ेलदारों में से भटनेर के राजा ने अपने हिस्से का ख़राज अदा करने से इंकार किया। इस लिये महमूद को वहां आना पड़ा। राजा सिंधुनदी के कनारे जंगलों में भाग गया। और फिर वहां नाउमेदी के सबब उस ने अपने तईं आप ही मार डाला। १००४ ई०

तीसरी बार महमूद मुल्तान के हाकिम अबुल्फ़तह लोदी को जो उस से फिर कर राजा अनन्दपाल से मिल गया था ज़ेर करने को इस तरफ़ फ़ौज लाया राजा ने अपने मेली की पच्छ की। पर आख़िर हारकर कश्मीर भागना पड़ा अबुल्फ़तह ने कुछ नज़र नज़राना देकर महमूद को राज़ी कर लिया महमूद को भी ग़ज़नी जल्द लौटना मंज़ूर था क्योंकि उधर से तातार के बादशाह की चढ़ाई की बहुत गर्म ख़बर आयी थी। १००५ ई०

* संस्कृत नाम भिंडा मालूम होता है।

महमूद के साथ दोसौ हाथी जंगी मौजूद थे तोपख़ाने की अब तक कोई क़दर न जानता था और न उस की हिकमतों से वाक़िफ़ था। हाथियों के साम्हने तातारियों के घोड़े काहे को ठहर सकते थे बलख़ के पास लड़ाई हुई महमूद ने फ़तह पायी। तातारियों ने पीठ दिखायी॥

१००६ ई० महमूद सिंधु कनारे के ज़िलों को सुखपाल के सपुर्द कर गया था। यह सुखपाल हिन्दू से मुसल्मान बना था॥ लेकिन जब महमूद बलख़ की तरफ़ गया। तो इसने फिर हिन्दू बनकर उस की इताअ़त से सिर फेरा॥ महमूद ने बलख़ से लौटकर इसे तो जनम भर के लिये क़िले में क़ैद कर दिया। और अनन्दपाल को सज़ा देने के लिये लश्कर इकट्ठा किया॥

१००८ ई० अनन्दपाल भी ग़ाफ़िल न था देश देशके राजाओं से दूत यानी एल्ची भेज भेजकर कहला भेजा। कि इस महमूद का इधर बढ़ना हम सबके वास्ते यकसा दुखदायी है इसके हाथ से किसी का भी धर्म और धरती और धन नहीं बचेगा॥ अगर कुछ हौसिला और हिम्मत रखते हो तो आओ रन में मेरा साथ दो अब तक भी कुछ नहीं बिगड़ा है निदान उज्जैन ग्वालियर कालिंजर कन्नौज अजमेर और दिल्ली के राजा अपनी अपनी सेना सज के अनन्दपाल का साथ देने को पंजाब की तरफ़ सिधारे पिशावर के पास ही लड़ाई हुई इत्तिफ़ाक़ से अनन्दपाल का हाथी भड़क गया और पीछे को भाग चला। लश्कर ने अपने सेनापति को भागा समझ कर रन से मुंह मोड़ा॥ महमूद ने पंजाब तक उन का पीछा किया वे तो जिधर तिधर तीन तेरह होगये महमूद ने मैदान सूना पाकर नगरकोट यानी कोटकांगड़ा जा लूटा। सात लाख दीनार सातसौ मन * सोने

---

* मन अरब का होता है हिंदुस्तान में चालीस सेर का गिना जाता है लेकिन उस में भी सेर कम ज़ियादा रहता है तवारीख़ फ़रिश्ता के बमूजिब अलाउद्दीन ख़िलजी के ज़माने में जो सन् १२९५ ई० में तख़्त पर बैठा था यहां ७० तोले का सेर था कि इस हिसाब से तब का मन अब का बारह ही सेर हुआ तबरेज़ी मन साढ़े पांच सेर का होता है और अरब का मन कुल दो सेर का पर महमूद के साथवालों ने अगर सेर का भी मन माना हो तो भी बहुत होता है॥

चांदी का असबाब दो सौ मन निरा सोना दो हज़ार मन चांदी और बीस मन जवाहिर यहीं महमूद के हाथ लगा॥

सन् १०१० ईसवी में महमूद मुलतान से अबुलफ़तह लोदी को क़ैद कर लेगया और फिर दूसरे साल आकर थानेसर लूटा। और जहां तक हिन्दू उसके हाथ लगे लौंडी गुलाम बनाने को ग़ज़नी ले गया। कहते हैं कि वहां एक माणिक उसे साठ तोले का मिला। इसके बाद उस ने दो दफ़ा कश्मीर पर हमला किया॥ १०१० ई०

नवीं चढ़ाई उस की हिंदुस्तान पर बड़ी तय्यारी के साथ हुई तवारीख़ फ़रिश्ता में उस के लशकर की तादाद एक लाख सवार और बीस हज़ार पैदल लिखी है वह अपने लशकर को इस ढब अचानक कन्नौज के साम्हने ले आया कि वहां के राजा कुंवरराय से कुछ भी न बन पड़ा। गले में दुपट्टा डालकर बाल बच्चों समेत महमूद के पास चला आया॥ महमूद ने जो अपनी उमर में तारीफ़ के लायक़ कोई काम किया। तो वह यही इस वक्त अपनी बड़ाई का दिखलाना था॥ राजा की बड़ी ख़ातिरदारी की। और उसे हर तरह से तसल्ली दी॥ तीन दिन तक राजा का मिहमान रहा। चौथे दिन कन्नौज से ग़ज़नी को लौटा॥ *किताबों में उस वक्त वालों ने कन्नौज को बड़ी बड़ाइयां लिखी हैं। कोई उस की शहरपनाह का घेरा पंदरह कोस का लिखता है कोई उस में तीस हज़ार तंबोलियों की दूकान बतलाता है कोई वहां के राजा की फ़ौज में पांच लाख पियादे गिनता है कोई उस में तीस हज़ार सवार और अस्सी हज़ार ज़िरहपोश और बढ़ाता है पर [illegible] तो निरा एक क़सबा सा बाक़ी रह १०१० ई०

---

* लेकिन तारीख़ यमीनी में लिखा है कि राजा गंगा पार भाग गया बादशाह ने एक ही रोज़ में सातों क़िले जो अलग अलग गंगा किनारे बने हुए थे फ़तह कर लिये दस हज़ार के लगभग वहां मंदिर थे बादशाह ने अपने सिपाहियों को लूटने और क़ैदी लेने की इजाज़त दी लोग "अपनी गूंगी बहरी मूरतों का" यह हाल देखकर मारे डर के जिधर राह पायी निकल गये सब" बेवा और यतीमों की तरह" अकेले छूट गए जो निकल न जा सके क़तल किये गये॥

गया है टूटी फूटी इमारत अलबत्ता दूर दूर तक उसके गिर्द नज़र पड़ती है ॥

महमूद रस्ते में मथुरा को तबाह करता गया बीस दिन तक उसे लूटा। और मूरतों को तुड़वा के मंदिरों में बुरा बुरा काम किया ॥ १०० ऊंट निरी तोड़ी हुई चांदी की मूरतों से भरके ले गया। पांच सोने की थीं उन में एक का वज़न हमारे अब के चार मन से ऊपर था ॥ महावन को क़तल किया राजा अपने बालबच्चों को मारकर आप भी मर रहा। इस बार महमूद यहां से पांच हज़ार तीन सौ आदमियों को ग़ज़नी पकड़ ले गया ॥

दसवीं बार महमूद को कन्नौज के राजा की मदद के वास्ते आना पड़ा। पर कालिंजर के राजा ने उसे महमूद के पहुंचने से पहले ही काट डाला था ॥ और ग्यारहवीं बार वह कालिंजर के राजा से लड़ने को आया। लाहौर के राजा अनन्दपाल के बेटे ने कन्नौज के आने में महमूद का मुक़ाबला किया था इस लिये महमूद ने उस का राज छीनकर ग़ज़नी में मिला लिया ॥

१०२४ ई० बारहवां हमला महमूद का पत्तनसोमनाथ पर हुआ। अब तो यहां वाले उस का नाम तक भी भूल गये पर उस वक़्त वह इस देस के बड़े तीर्थों में गिना जाता था ॥ गुजरात के प्राय द्वीप के दखन समुद्र के कनारे सोमनाथ महादेव का नामी मंदिर बना था। छप्पन खंभे उस में जवाहिर जड़े हुए लगे थे और दो सौ मन भारी सोने की ज़ंजीर से घंटा लटकता था ॥ दो हज़ार गांव उस के ख़र्च के वास्ते मुआफ़ थे। और दो हज़ार पंडे वहां के पुजारी गिने जाते थे ॥ तीर्थ की जगह समझ के आस पास के बहुतेरे राजा उसके बचाने को इकट्ठा हो गये। पर महमूद कब छोड़ता था तीन दिन तक लड़ाई होती रही पांच हज़ार से ऊपर रजपूत खेत रहे बाक़ी नावों पर सवार होकर निकल गये ॥ महमूद जब मंदिर में गया तो ब्राह्मण बहुत गिड़गिड़ाये और अर्ज़ किया कि आप मूरत को न छुएं तो जितना रुपया कहें हम दयंड भरें बादशाह ने कहा कि मैं बुतशिकन हूं बुत-

फ़रोश नहीं बना चाहता। यानी मूरतों का तोड़नेवाला हूं बेचने वाला नहीं बनूंगा॥ और यह कह के एक गुर्ज़ यानी गदा उस पचगज़ी मूरत में ऐसी मारी। कि वह टुकड़े टुकड़े हो गयी॥ पर देखो उस मालिक की माया कि उस के भीतर से इतने हीरे मोती और जवाहिर निकले जिन का मोल उस दरब से जो ब्राह्मण देना क़बूल करते थे कहीं बढ़कर था। महमूद ने उस मूरत के दो टुकड़े तो मक्के मदीने भिजवा दिये और दो ग़ज़नी में अपनी कचहरी और मसजिद की सीढ़ियों में जड़वा दिये कहते हैं कि इस हमले में कम से कम दस करोड़ का माल महमूद के हाथ लगा*॥

ग़ज़नी पहुंचकर तुर्त ही महमूद को एक बार मुलतान तक फिर आना पड़ा। वहां उन जाटों को जिन्हों ने सोमनाथ से लौटते वक़्त उस के सिपाहियों के साथ कुछ छेड़ छाड़ की थी सज़ा देना बहुत ज़रूर था॥ लेकिन फिर हिन्दुस्तान पर कोई चढ़ाई नहीं की ईरान तूरान ही की मुहिम्मों में फंसा रहा। यहां तक कि सन् १०३० ई० में बीमार होकर इस दुन्या से उठगया †॥ १०३० ई०

मरने से कुछ देर पहले उसने ख़ज़ाने से मंगवाकर सोने चांदी और जवाहिरात का अपनी आंखों के साम्हने ढेर लगवा दिया और फिर देर तक उन्हें देख देखकर रोया किया। यह नहीं मालूम कि वह उन ज़ुल्म और ज़ियादतियों को सोचकर रोता था कि जिनसे वे हाथ लगे या इस बात को कि अब उन्हें साथ न ले जा सकता था॥

निदान सन् ११८६ ई० तक ग़ज़नी की सल्तनत इसी महमूद के घराने में रही पर हिन्दुस्तान पर ऐसा किसी ने दिल नहीं चलाया। हां पंजाब को जिसे महमूद ने ग़ज़नी की सल्तनत में मिला लिया था अलबत्ता अपने तहत में रक्खा॥ उस के परपोते दूसरे मसऊद १०९८ ई०
के वक़्त में कुछ फ़ौज गंगा के पार तक आकर लूट मार करती हुई مسعود ثانی

---

* वह चन्दन के किवाड़ जो सरकारी फ़ौज सन् १८४२ ई० में ग़ज़नी से उखाड़ लायी थी और अब आगरे के क़िले में रक्खे हैं इसी सोमनाथ के बतलाते हैं॥

† تاریخ وفات محمود غزنوی شاہباز جہان سنہ ۴۲۰ ہجری
مہ عشرت سے کوئی جام جواہر لنڈھا ہی * آسمان اس کا وجود کاسۂ سر لنڈھا ہی

११८६ ई० फिर लाहोर को मुड़ गया औ सन् ११८६ ई० में महमूद के
خسروملک परपोते के परपोते ख़ुसरवमलिक को शहाबुद्दीन मुहम्मदग़ोरी
लाहोर से क़ैद कर ले गया। और उसी के साथ वह ग़ज़नी
का घराना तमाम हुआ॥

شهاب‌الدین محمدغوری

शहाबुद्दीन मुहम्मदग़ोरी

क़ंदहार से सात आठ मंज़िल आगे ग़ोर एक जगह है मुद्दत से वहां के हाकिम अलग होते आये थे महमूद ग़ज़नवी ने अपने ताबे कर लिया था। और उसके जानशीनों में से बहराम ने अपनी लड़की का ब्याह भी वहां के हाकिम कुतबुद्दीन मुहम्मद के साथ कर दिया था॥ पर फिर आपस में जो तकरार पड़ गयी तो वह यहां तक बढ़ी। कि बहराम ने अपने दामाद की जान ही ले डाली और उस के भाई सैफ़ुद्दीन की भी बुरी नौबत की॥ मुंह काला करके बैल पर शहर में घुमाया। और फिर सिर कटवा के ईरान के बादशाह के पास भेज दिया॥ इन्हीं अपने दोनों
علاءالدین غوری भाइयों का बदला लेने को अलाउद्दीन ग़ोरी ने जिसे तवारीख़ वालों ने जहांसोज़ * ख़िताब दिया है ग़ज़नी पर चढ़ाई की सात दिन की लूट मार में शहर को तो फुंकफांक कर बिल्कुल नेस्तनाबूद कर दिया और शहरवालों को जो उसके साथियों की तलवार से बचे बहुतों को पकड़कर ग़ोर ले गया। और वहां अपने मकानों के लिये उन के लोहू से गारा बनवाया॥ निदान इसी अलाउद्दीन के भतीजे शहाबुद्दीन मुहम्मद ग़ोरी की क़ैद में जैसा कि अभी ऊपर लिख आये हैं बहराम का पोता ख़ुसरव-मलिक जो महमूद के घराने में आख़िरी बादशाह हुआ जान से गया। और ग़ज़नी का सारा राज ग़ोर में मिला॥

हिन्दुस्तान में मुसल्मानों की बादशाही की जड़ जमाने वाला इसी शहाबुद्दीन को समझना चाहिये सन् ११७६ ई० में उस ने उरूज लिया था और दो बरस बाद गुजरात पर चढ़ाई की। लेकिन वहां उस ने शिकस्त खायी॥ फिर कुछ दिनों पीछे

---

* जगतदाहक यानी संसार का जलानेवाला॥

सिंध को लूटा। और सन ११९१ ई० में दिल्ली की तरफ़ फ़ौज लाया॥

इस पहली लड़ाई में जो थानेसर और करनाल के बीच तलावड़ी के मैदान में हुई। शहाबुद्दीन ने पृथीराज से शिकस्त खायी॥ पर सन् ११९३ ई० में वह बड़ी भारी फ़ौज लेकर आया। जयचंद राठोर कन्नोजवाले को अपने मौसेरे भाई पृथीराज का अनंगपाल की गोद बैठना और दिल्ली और अजमेर का राज यक होकर उस का बढ़ना बहुत बुरा लगा था॥ राजसूय * यज्ञ और अपनी बेटी के स्वयम्बर * में उसे न बुलाकर उस की मूरत सोने की बना कर द्वारपालों की जगह रखवा दी पृथीराज यह हाल सुनकर बड़े गुस्से में आया। और चुने हुए सर्दारों के साथ धावा मारकर जयचंद की बेटी को हर ले गया॥ इस में पृथीराज के अच्छे अच्छे आदमी काम आये। यानी १०८ सर्दारों में से ६४ खेत रहे॥ और यही आपस का बैर बिरोध इस देस में मुसल्मानों के ग़ालिब हो जाने का असली सबब हुआ। पृथीराज को इस नाज़ुक वक़्त में जयचंद की मदद का कुछ भी भरोसा न था॥ बल्कि दुश्मन से साज़िश रखने का खटका था। तो भी घमंड के नशे में चूर था अपने ज़ोर के आगे दुश्मन की कुछ हक़ीक़त नहीं समझता था॥ तीन हज़ार हाथी और तीन लाख सवारों का लश्कर इकट्ठा कर लिया था। पैदलों का कुछ शुमार न था॥ डेढ़ सौ से ऊपर उसके लश्कर में राजा गिने जाते थे शहाबुद्दीन जैसे दूध का जला छाछ भी फूंक फूंक कर पीता है बड़ी ख़बर्दारी से लड़ता था। लड़ाई के वक़्त धोखा देने के लिये यकबारगी अपने लश्कर की बाग पीछे मोड़ दी हिन्दुओं ने समझा कि मुसल्मानों के पांव उखड़े पीठ दिखाकर भागे जाते हैं आगा पीछा कुछ न विचारा जिधर जिस का जी चाहा

११९१ ई०

११९३ ई०

---

* यह यज्ञ और स्वयम्बर इस देस में आख़िरी हुआ फिर कभी किसी ने इसका हौसला न किया॥

दुश्मन का पीछा करने को क़दम उठाया ॥ शहाबुद्दीन ने जब देखा कि हिन्दु बिखर गये बारह हज़ार चुने हुए ज़िरहपोश सवारों के साथ भट आ राजा को घर दबाया । बहुतेरे सूर और सामंत उस जगह काम आये चित्तौड़ का राजा समरसी बड़ी बहादुरी के साथ मारा गया ॥ पृथीराज को शहाबुद्दीन ने जीता पकड़ लिया । और फिर उस के गले पर छुरा चलवाया*॥ सच है फ़तह और शिकस्त बिलकुल उस मालिक के हाथ है अजमेर में इस ने हज़ारों को क़तल किया । और हज़ारों को लौंडी गुलाम बनाया ॥ और तब पृथीराज के किसी रिश्तेदार को भारी ख़िराज देने के क़रार पर वहां का राज देकर और अपने गुलाम कुतबुद्दीन ऐबक को हिन्दुस्तान में छोड़कर आप ग़ज़नी को लौट गया । कुतबुद्दीन ने दिल्ली और कोयल पर अपना क़ब्ज़ा किया ॥

११९४ ई० फूट का यही फल है कि दोनों बर्बाद हों पस कन्नौज का राजा जयचंद राठौर भी कब बचने पाता था । दूसरे साल शहाबुद्दीन ने उस पर चढ़ाई की और इटावे के ऊपर उसे शिकस्त देकर बनारस तक अपने क़ब्ज़े में कर लिया गोया बंगाले का दर्वाज़ा मुसल्मानों के लिये खोल दिया जयचंद इस लड़ाई में कुतबुद्दीन के तीर से मरा ॥ उस के घरबार के लोग अंतर्वेद छोड़कर मारवाड़ को चले गये । कहते हैं कि शहाबुद्दीन ने बनारस में कम से कम एक हज़ार मंदिर तुड़वाये ॥

११९५ ई० सन् ११९५ ई० में शहाबुद्दीन फिर हिन्दुस्तान में आया और बयाना लेकर ग्वालियर का मुहासरा किया । लेकिन इसी अर्से में किसी ज़रूरत के सबब उसे अपने मुल्क की तरफ़ लौट जाना पड़ा ॥ सन् १२०६ ई० में एक दिन जब उस का डेरा हवा के वास्ते एन सिंधु नदी के कनारे पर पड़ा था । आधी रात के वक़्त कई एक बदमआश जिन के रिश्तेदार उस की लड़ाइयों में मारे गये थे दर्या में तैरकर डेरे के अन्दर घुस

* पृथीराज का सब हाल उस के भाट चंद कवीश्वर ने पृथीराजरायसे में बहुत अच्छी तरह लिखा है ॥

आये और तलवारों से उस का क़ीमा कर डाला । * ख़ज़ाना उस के पास बहुत था । तवारीख़ फ़रिश्ता के बमूजिब पांच मन तो उस में निरा हीरा था । ग़ज़नी में तख़्त पर उस का १२०६ ई०
भतीजा महमूदग़ोरी बैठा । लेकिन हिंदुस्तान पर कुतबुद्दीन ऐबक का क़ब्ज़ा रहा । मालवा और उस के आस पास के ज़िलों के सिवाय बिल्कुल दख़ल में आ गया था । सिंध और बंगाला भी फ़तह हुआ जाता था । गुजरात की राजधानी अनहलवाड़े पर मुसल्मानों का झंडा फहराता था । और जो राजा रह गये थे उन्हों ने ख़राज देना क़बूल कर लिया था । महमूदग़ोरी ने तख़्त पर बैठते ही कुतबुद्दीन ऐबक को बादशाही का ख़िलअ़त और ख़िताब भिजवा दिया । और फिर तब से यही कुतबुद्दीन ऐबक हिंदुस्तान का बादशाह कहलाया ।

कुतबुद्दीन ऐबक † قطب الدين ايبک

कुतबुद्दीन ऐबक को बचपन में किसी दौलतमंद ने नेशापुर के दर्मियान ग़ुलामी में मोल लिया था और उसी ने उसे फ़ारसी अरबी पढ़ाया । उस के मरने पर वह एक सौदागर के हाथ बिका और उस सौदागर ने उसे शहाबुद्दीन मुहम्मद ग़ोरी को नज़र किया । शहाबुद्दीन की उस पर ऐसी मिहर्बानी हुई कि होते होते वह हिंदुस्तान का बादशाह हो गया । क्या महिमा है सर्वशक्तिमान जगदीश्वर की कि जिसने लड़कपन में नेशापुर के सौदागरों की ग़ुलामी की वह बुढ़ापे में हिंदुस्तान के तख़्त पर मरा ‡ और इस देश में मुसल्मानों के राज की जड़ जमानेवाला हुआ ।

आरामशाह آرام شاہ

चौगान खेलते घोड़े से गिरकर कुतबुद्दीन ऐबक के मरने १२१० ई०
पर उस का बेटा आरामशाह बरस भर भी तख़्त पर न बैठने

---

* تاریخ وفات شہاب الدین محمد غوری صاحب السریر سنہ ۶۰۲ ہجری

† ऐबक तुर्की में उसे कहते हैं जिसके हाथ की छोटी उंगली टूटी हो ।

‡ تاریخ وفات قطب الدین ایبک سلطنت پناہ سنہ ۶۰۷ ہجری

पाया था। कि उस के बहनोई शम्सुद्दीन अल्तिमश ने ताज बादशाही का अपने सिर पर रक्खा॥

शमसुद्दीन अल्तिमश •

شمس الدین التمش

कुतबुद्दीन ऐबक ने इसे एक हज़ार रुपये पर मोल लिया था। जिस दम इस ने आरामशाह से तख़्त छीना यह बिहार का सूबेदार था॥ इसी अर्से में चंगेज़ख़ां † मुग़लों का सर्दार बे शुमार फ़ौजें लेकर तातार से बाहर निकला था। और सिंधु पार के देसों में प्रलय का सा दुंद मचा रक्खा था॥ कहते हैं कि मुल्कों की तबाही ऐसी आज तक कभी किसी ने नहीं की। जैसी इस मुग़ल के हाथ से मालिक को मंज़ूर हुई॥ जहां जाता था सिवाय काटने मारने डाहने जलाने लूटने कुटाने के और कुछ भी उसे काम न था। गोया इस सारी दुनया को उस ने बे आदमी कर डालना बिचारा था॥ जब ख़ारज़्म का बादशाह जलालुद्दीन जान बचाने के लिये घोड़ा तैराकर सिंधु इस पार भाग आया तो मुग़लों की कुछ फ़ौज उसका पीछा करती हुई मुल्तान और सिंध के इलाक़े तक पहुंची थी। पर शम्सुद्दीन अल्तिमश निहायत अक़्लमन्द था ज्यों हीं जलालुद्दीन ने इस मुल्क में कुछ दिन ठहरने का इरादा ज़ाहिर किया तुर्त उसे कहला भेजा कि यहां की आब हवा आप के मिज़ाज मुबारक के मुआफ़िक़ न आवेगी॥ जलालुद्दीन समझ

• رسالہ ترکی والد التمش نے معنی فوج لکھتا ہی جو مہمان هراول و سردار ہو اور تواریخوں میں اسکا یہہ نام ہونے کا باعث یوں لکھا ہی کہ وہ بروز خسوف متولد ہوا ہو۔ کہف قاضی منہاج السراج جرجانی کے اشعار ذیل سے میم مکسور اور مشدد معلوم ہوتا ہی اگر تشدید جائز نرکھیں (ت) کے کسرہ کو بڑھاکر خواہ (ت) کو (ی) کے ساتھہ ملاکر پڑھنا پڑیگا • آن خداوندی کہ حاتم بذل و رستم کوشش است • ناصر دنیا و دین محمود بن التمش است • از ناصرالدین شاہ محمود ابن التمش • ملک نزدش دعا خوانده فلک پیشش زمین گشته • اور اس تاریخ کے شعر سے ساکن • چو شش صد سی و سہ از سال هجری • گذشت و بست روز از ماه شعبان • بشد سلطان شمس الدین التمش • بسوئے جنت المأوا خراسان •

† अमीर ख़ुसरव अपनी तारीख़ ख़ज़ाइन में चंगेज़ख़ां को सब जगह मलऊन लिखता है॥

गया। सिंध से ईरान की तरफ़ चलता हुआ। इस लिये मुग़लों की फ़ौज भी लौट गयी। पर नमूना अपने ज़ुल्म का उतने ही में दिखलाती गयी। यानी दस हज़ार हिन्दू जो गुलाम बनाने के वास्ते पकड़ लिये थे। अब लश्कर में रसद की कमी हुई तलवारों से काटडाले। बेचारे इन बेगुनाहों में से छोड़ा एक को भी नहीं चंगेज़ख़ां और उस के साथ के मुग़ल मुसल्मान न थे। बल्कि एक तरह के बौद्ध थे वे मूरतों को पूजते थे और वेद और क़ुरान दोनों को एक सा समझते थे।

शम्सुद्दीन अल्तिमश ने अपना दबदबा सारे हिन्दुस्तान पर जमाया सिंध और बंगाला भी दुबारा फ़तह करलिया। रनथंभोर जिसे रन्तभंवर भी कहते हैं और मांडू के मशहूर क़िलों को सर किया। उज्जैन में महाकाल का सौ गज़ ऊंचा नामी मंदिर तोड़ा। और ग्वालियर को दुबारा अपने क़ब्ज़े में लाया। बग़दाद के ख़लीफ़ा ने उसे बादशाही का ख़िलअ़त भेजा और वह ऊंचा सुन्दर क़ुतब मीनार भी दिल्ली में इसी बादशाह ने बनवाया। निदान सन् १२३६ ई० में शम्सुद्दीन अल्तिमश उस दुनया को सिधारा। और रुक्नुद्दीन उस का बेटा तख़्त पर बैठा।

रुक्नुद्दीन फ़ीरोज़शाह

रکن الدین فیروزشاہ

इसे रात दिन भांड़ और कस्बियों से काम था। नशा और तमाशबीनी यही शग़ल आठों जाम था। सल्तनत मा के भरोसे छोड़ दी थी। ख़ज़ाना बिल्कुल वाहियात में लुटाता था मा भी इस की बड़ी ज़ालिम थी। सात ही महीने में तख़्त से उतारा गया। और उस की जगह लोगों ने उस की बहन रज़ीया को बिठाया।

रज़ीया बेगम

رضیہ بیگم

यह बेगम बड़ी होशयार थी अगर्चे बहुत पढ़ी लिखी न थी तो भी क़ुरान अच्छी तरह पढ़ लेती थी। नित बादशाहों की तरह क़बा और ताज पहनकर तख़्त पर दर्बार करती थी। नक़ाब मुंह पर कभी नहीं डालती थी और बड़े ज़रूर इंसाफ़ १२३६ ई०

के साथ लोगों की नालिश फ़र्याद सुनती थी । पर एक ही चूक उस से ऐसी बनी । कि जिस से आख़िर उस की जान गयी । उस के इस्तबल का दारोग़ा एक हबशी गुलाम था । वही उस को बग़ल में हाथ देकर घोड़े पर सवार कराता था । उस पर ऐसी मिहर्बान हुई कि उसे अमीरुलउमरा का ख़िताब दिया । इस सबब सब का दिल उस से फिर गया और बड़ा दंगा बखेड़ा हुआ । नतीजा उस का यह निकला । कि हबशी और बेगम दोनों मारे गये * और मुल्क उस के भाई मुइज़ुद्दीन
१२३६ ई० बहराम के हाथ आया ।

معزالدین بہرام

मुइज़ुद्दीन बहराम

लेकिन दो बरस दो महीने सल्तनत करके यह भी बलवाइयों की क़ैद में जान से गया । इस ने बिल्कुल इख़्तियार अपने मिहतर फ़राश को दे रक्खा था और उसी की सलाह पर चलता था इसी सबब बलवा हुआ और अलाउद्दीन मस-
१२४१ ई० ऊद जो रुक्नुद्दीन के लड़कों में से था तख़्त पर बैठा ।

علاءالدین مسعود

अलाउद्दीन मसऊद

कुछ ऊपर चार ही बरस का अर्सा गुज़रा होगा । अलाउद्दीन मसऊद भी मारा गया । इस के वक़्त में मुग़लों ने तिब्बत की राह बंगाले पर चढ़ाई की । पर शिकस्त खायी ।

ناصرالدین محمود

नासिरुद्दीन महमूद

यह शम्सुद्दीन अल्तिमश का बेटा था । जब बादशाह हुआ
१२४६ ई० सल्तनत का बिल्कुल काम अपने बहनोई वज़ीर ग़यासुद्दीन-बल्बन के भरोसे पर छोड़ दिया अपना शौक़ ख़ाली किताब से रक्खा । नाम को बादशाह था पर सच पूछो तो दर्वेशी करता था । किताब नक़ल करके अपना पेट भरता । अपनी बेगम से खाना पकवाता लौंडी या मज़दूरनी एक भी उस के पास न रहने

* रज़ीया मरदानी पोशाक में भागी थी रास्ते में सोगयी किसी किसान ने उस की पोशाक के तले ज़री और मोती टकी अंगिया देखली जाना कि औरत है मार कर कपड़े उतार लिये लाश ज़मीन में गाड़ दी ।

National Library.

देता । जो कुछ ग़रीब मुहताजों के खाने में आता है वही आप भी खाता। निकाह एक ही किया था दूसरे का कभी ख़याल भी जी में न लाता। वज़ीर बहुत होशियार था। ग़यासुद्दीन अल्तिमश का गुलाम और दामाद था। पहले बादशाहों की ग़फ़लत से जो ख़राबियां और बेइंतिज़ामियां मुल्क में पड़ गयी थीं उनको दूर करने की कोशिश करता। उधर ग़ज़नी फ़तह की इधर कालिंजर तक दबदबा जमाया। नरवर का क़िला लिया। चंदेरी को भी जा दबाया। सन् १२५८ ई० में जब चंगेज़ख़ां के पोते हलाकू का एलची आया। तो दो हज़ार हाथियों के साथ पचास हज़ार सवार और दोलाख पियादे लेकर दिल्ली के बाहर उस का इस्तिक़बाल किया। १२५८ ई०

सन् १२६६ ई० में इस नेक बादशाह ने इस दुनया से कूच किया। १२६६ ई०
इस की नेकी यहां तक बयान करते हैं कि किसी दिन एक किताब जो अपने हाथ से नक़ल की थी अपने किसी अमीर को दिखला रहा था उस अमीर ने कई जगह ग़लती बतलाई बादशाह ने दुरुस्त कर दिया। लेकिन जब वह अमीर चला गया। तो फिर वैसा ही बना दिया जैसा पहले था। लोगों ने सबब पूछा आप ने फ़र्माया कि मुझ को पेश्तर से मालूम था कि किताब ग़लत नहीं थी। लेकिन एक ख़ैरख़ाह सलाह देनेवाले का दिल दुखाने से यह मिहनत अपने ऊपर लेनी मैंने बहुत मुनासिब समझी।

ग़यासुद्दीन बल्बन

غیاث الدین بلبن

काम तो बादशाही का यह नासिरुद्दीन महमूद ही के वक़्त से करता था। लेकिन अब उसके मरने पर पूरा बादशाह हो गया। सन् १२६६ ई० में मेवातियों ने सिर उठाया पर जैसा किया वैसा ही फल पाया। कुछ कम ज़ियादा एक लाख आदमी उन के मारे गये सन् १२७९ ई० में बंगाले का सूबेदार तुग़रल बिगड़ा और दावा बादशाही का किया। लेकिन जल्द ही उस का सिर काटा गया। १२७९ ई०

दिल्ली इस ज़माने में बड़ी रौनक़ पर थी सिवाय उन बादशाह और बादशाहज़ादों के जो मुग़लों के डर से अपने मुल्क छोड़ छोड़कर पहले से यहां आ बसे थे और पच्चीस से कम न थे पंदरह इस बादशाह के वक़्त में आये। यह सभों की ख़ातिरदारी और पर्वरिश करता और वह सब ख़ुशी से इस के तख़्त के गिर्द हाथ बांधकर खड़े होते। शहर में हर एक के मुल्क के नाम से महल्ले बस गये थे। और समरक़ंदी काशग़री ख़ताई रूमी ग़ोरी ख़्वारज़्मी वग़ैरा पुकारे जाते थे। यह बादशाह अपना दबदबा जमाने और शानशौकत दिखलाने में जैसी कोशिश करता। वैसी ही अद्ल इंसाफ़ में मुस्तइदी रखता। अवध के सूबेदार हैबतख़ां ने शराब के नशे में किसी ग़रीब को मार डाला था उस की औरत ने नालिश की। बादशाह ने हैबतख़ां को पांच सौ कोड़े लगवाकर उस औरत के हवाले किया और कह दिया कि आज तक हमारा गुलाम था अब तेरा हुआ हैबतख़ां जी ने बड़ी सिफ़ारिशों से बीस हज़ार रुपये देकर उस औरत की गुलामी से आज़ादी पायी। कहते हैं कि जब से वह बादशाह हुआ शराब पीना बिल्कुल छोड़ दिया। नमाज़ और रोज़ा इख़्तियार किया। मातमपुर्सी के लिये अपने अमीरों के घर जाता। जुमे के दिन मसजिद से लौटते वक़्त आलिम फ़ाज़िलों के मकान पर उन से मुलाक़ात करता। इस धूम से सवारी निकलती थी कि पांच सौ आदमी नंगी तलवार लेकर अर्दली में चलते तो भी रास्ते में जहां देखता कि वाज़ की मजलिस यानी उपदेशसभा है उतर कर सुनता और अकसर रोने लगजाता। बे वज़ू कभी न रहता बे मोज़े और टोपी कभी किसी ख़िदमतगार ने भी उसे न देखा पर सज़ा बहुत सख़्त देता और सल्तनत की पायदारी के लिये नाहक भी बहुतों की जान ले डालता। आख़िरी वक़्त में इस बादशाह को पंजाब की तरफ़ लड़ाई में मुग़लों के हाथ से अपने बड़े बेटे मुहम्मद के मारे जाने का बड़ा रंज हुआ। अमीर ख़ुसरव मशहूर शाइर इसी शाहज़ादे मुहम्मद के पास रहता था जब शाहज़ादा मारा गया अमीर ख़ुसरव

दुश्मनों की क़ैद में पड़ गया लेकिन फिर छूट आया॥ निदान ग़यासुद्दीन बल्बन ८० बरस की उम्र में इस असार संसार से कूच करगया। और जब उस के बेटे * क़राख़ां ने सल्तनत से इन्कार किया वज़ीरों ने उस के पोते केक़ुबाद को तख़्त पर बिठाया॥ १२८८ ई०

मुइज़्ज़ुद्दीन केक़ुबाद

معزالدین کیقباد

इस की उम्र अठारह बरस की थी एकबारगी ऐश में डूबगया। पहले अपने चचेरे भाई केख़ुस्रव को क़त्ल किया और फिर और भी बहुत से अमीरों का सिर कटवाया॥ मसजिद और मंदिरों में भी वाहियात और तमाशबीनी होने लगी। सारी दिल्ली भांड़ भगतिये ढाढ़ी कत्थक कस्बी भड़वे इसी क़िस्म के आदमियों से भर गयी॥ जब उस का बाप क़राख़ां बंगाले का सूबेदार समझाने और नेक नसीहत देने को आया। यह उस से लड़ने के इरादे पर फ़ौज लेकर निकला॥ और फिर जब वह इस के दर्बार में हाज़िर हुआ। यह पत्थर की तरह तख़्त पर बैठा रहा और अपने बाप को तीन २ बार ज़मीन चूमते और आदाब बजा लाते देखकर ज़रा भी न हिला॥ आख़िर जब चोबदार पुकारा "क़राख़ां निगाह रू बरू जहांपनाह सलामत" क़राख़ां से न रहा गया। ढाढ़ मारकर रोने लगा॥ तब तो केक़ुबाद के दिल पर ग़ैरत ने असर किया। तख़्त से उतर कर बाप के क़दमों पर गिरपड़ा और हाथ पकड़कर अपने बराबर बिठाया॥ क़राख़ां ने समझाने और नसीहत करने का फ़ायदा न देखकर उलटे पांव अपने सूबे का रास्ता लिया। और बेटे को उस की १२८८ ई०
क़िस्मत के हवाले किया †॥ केक़ुबाद थोड़े ही दिनों में अपने सर्दारों के हाथ से मारा गया। बीमार तो था ही एक कम्बख़्त

* असली नाम इस का बुग़राख़ां है बुग़रा तुर्की में शेर को कहते हैं (ग़) (क़) से बदल जाता है बुक़रा हुआ संक्षेप के लिये क़राख़ां पुकारने लगे॥

† अमीर ख़ुसरव ने इसी मुलाक़ात के हाल में क़िरानुस्सादैन लिखी है॥

में लपेटकर लात और लाठियों से भुरता करडाला। जब दम निकल गया खिड़की की राह जमना में फेंक दिया। और उस की जगह समाने का नाइब नाज़िम जलालुद्दीन फ़ीरोज़ ख़िल्जी तख़्त पर बैठा। निदान ग़ोरी बादशाहों के गुलामों की सल्तनत केक़ुबाद तक रही। जलालुद्दीन से ख़िल्जियों के घराने में आयी॥

جلال الدین فیروز خلجی

जलालुद्दीन फ़ीरोज़ ख़िल्जी

ख़िल्जी अफ़्ग़ानिस्तान की सर्हद पर पहाड़ियों की एक क़ौम है जलालुद्दीन फ़ीरोज़ जब तख़्त पर बैठा ७० बरस का था। मिज़ाज उस का सादा और रहमदिल परले सिरे का।
१२९४ ई० सन् १२९४ ई० में उस के भतीजे अलाउद्दीन ने ८००० सवारों के साथ दखन में देवगढ़ * के राजा रामदेव को जा घेरा॥ और बहुतसा † सोना चांदी और जवाहिरात लेकर तब उस का पिंड छोड़ा॥ यह मुसल्मानों की दखन में पहली चढ़ाई थी अलाउद्दीन ने यह बड़ा भारी पाप का काम किया। कि
१२९५ ई० सल्तनत के लालच से अपनी आंखों के साम्हने अपने बूढ़े चचा को धोखा देकर मरवा डाला॥

علاءالدین خلجی

अलाउद्दीन ख़िल्जी

१२९६ ई० इस ने तख़्त पर बैठते ही पहले तो जलालुद्दीन के दो लड़कों को क़त्ल किया। फिर जब गुजरात फ़तह करके अपनी सल्तनत में मिलाया तो फ़ौज से लूट का माल मांगा फ़ौज ने बलवा किया॥ बहुत आदमी मारे गये। जो भागे बादशाह ने उन के बालबच्चे और घर के लोग कटवाडाले॥ उन की औरतों को ख़राब करने के लिये नौकरों के हवाले किया। उन के दूध पीते बच्चों को उन की मा और बहनों के सिर पर

---

* जिसे अब दौलताबाद कहते हैं॥

† तवारीख़ फ़रिश्ता में लिखा है कि हज़ार मन चांदी छसौ मन सोना सात मन मोती और दो मन हीरा पन्ना और माणक लिया॥

पटकवा पटकवा कर भुरता कर डाला। अलाउद्दीन के वक़्त में मुग़लों ने इस मुल्क पर कई बार चढ़ाई की। और बड़ी हाय हुए मचायी। लेकिन शिकस्त हमेशा खाते रहे। जो गिरफ़्तार हुए हाथियों के पैरों से पिसवाये गये या उन के गलों पर छुरे चलवा दिये। एक दफ़ा नौ हज़ार मुग़ल इसी तरह मारे गये। उन के बच्चे और औरतों की भी जान नहीं बख़्शते थे।

साल भर के मुहासरे में रनथंभोर का क़िला फ़तह हुआ १३०० ई०
हम्मीर वहां का राजा बड़ी बहादुरी से लड़ा। उस के मारे जाने पर सारा रनवास दुश्मनों के डर से आग में जलमरा। बाक़ी जितने आदमी उस क़िले में रहे। क्या मर्द क्या औरत और क्या बच्चे सब के सब क़त्ल किये गये। कहते हैं कोई बाग़ी मीर मुहम्मदशाह हम्मीर की शरण में चला गया था जब बादशाह ने तलब किया हम्मीर ने कहला भेजा कि चाहे सूरज पच्छम में क्यों न निकले और चाहे सुमेर धरती से क्यों न मिल जाय मैं अपने शरणागत को हर्गिज़ तुम्हारे हवाले न करूंगा। जब तक दम है उसे बचाऊंगा। इसी पर बादशाह ने ख़फ़ा होकर चढ़ाई की क़िला फ़तह होने पर बादशाह ने देखा कि मीर मुहम्मद मैदान में घायल पड़ा है पूछा कि अगर इलाज कराके चंगा करें हमारे साथ क्या सलूक करेगा। जवाब दिया कि तुझे मारकर यह मीर मुहम्मद हम्मीर के बेटे को बादशाह बनावेगा बादशाह ने गुस्से में आकर उसे हाथी के पैरों से पिसवा डाला।

तीन बरस बाद चित्तौड़ का मशहूर क़िला फ़तह हुआ। १३०३ ई०
राजा रतनसेन * मारा गया। उस की पद्मिनी रानी जिस का नाम पद्मावती था अपनी सब सखी सहेलियों के साथ चिता पर बैठ कर जल गयी। इसी रानी के रूप की बड़ाई सुनने पर बादशाह ने धोखा देकर राजा को क़ैद कर लिया

* टाड साहिब इस राजा का नाम भीम लिखते हैं।

था और हुक्म दे दिया कि जब तक रानी न मंगा दे रिहाई न पावे रानी ने अलाउद्दीन को कहला भेजा कि मैं आती हूं मेरी सखी सहेली और बांदियों के लिये डोलियां भेजो और फिर सात सौ डोलियों में दस दस हथियारबन्द सिपाही छुपा लायी कि आप भी सलामत निकल गयी और अपने राजा को भी बन्दीख़ाने से निकाल ले गयी ॥ उस वक़्त तो बादशाह से कुछ न बन पड़ा । लाग की आग से अपनी ही छाती जलाता रहा ॥ लेकिन फ़तह पाने पर जब क़िले के अन्दर गया । और चाहा कि उस से अपना जी ठंढा करे उसके बदले वहां उस का मकान उस की चिता के धुंए से भरा हुआ पाया * ॥

१३०६ ई० देवगढ़ के राजा रामदेव ने मामूली नज़राना भेजने में कुछ उज़्र किया था इस लिये दखन को फ़ौज भेजी गयी राजा ने मुक़ाबले की ताक़त न देखी दिल्ली में आकर हाज़िर हुआ । और बहुत सा नज़र नज़राना देकर बादशाह को राज़ी कर लिया ॥ लेकिन फ़ौज जब देवगढ़ को जाती थी उस के अफ़सर ने गुजरात के भागे हुए राजा की रानी कमलादेवी को पकड़के बादशाह के हुज़ूर में भेज दिया । यह रानी ऐसी ख़ूबसूरत थी कि बादशाह ने उसी दम उसे अपनी बेगम बना लिया ॥ रानी ने अर्ज़ की कि जहांपनाह मेरी लड़की मुझ से भी बढ़कर ख़ूबसूरत है अगर भी राजा से मंगा ली जाय लड़की उस की देवलदेवी उन्हीं दिनों में देवगढ़ के राजा के लड़के से ब्याही गयी थी । बिदा होकर बाप के यहां से देवगढ़ जाती थी ॥ बादशाह का हुक्म होते ही रास्ते से पकड़ी आयी । बादशाह ने अपने लड़के ख़िज़्रख़ां को दे दी ॥ अमीर ख़ुसरव ने अपनी एक किताब में इसी देवलदेवी और ख़िज़्रख़ां का हाल

---

* इस का हाल मलिक मुहम्मद आरसी ने शेरशाह के ज़माने में अपनी किताब पदमावत में कहानी के तौर पर दोहे चौपाइयों में बहुत अच्छा लिखा है वहां सती हुई लिखता है ॥

लागी कंठ आग दे होरी । छार भयी जरि अंग न मोरी ॥

लिखा है* वह इस बादशाह के वक़्त में हज़ार रुपया साल तनख़ाह पाता था। सन् १३१० ई० में फिर दखन को १३१० ई०
फ़ौज भेजी गयी कर्नाटक के राजा बल्लालदेव को क़ैद कर लिया। उस की राजधानी द्वारसमुद्र श्रीरंगपट्टन से १०० मील वायुकोन को अब तक उजड़ पड़ी है बादशाही फ़ौज सेतबंद रामेश्वर तक पहुंची। और वहां भी मसजिद बना दी।
सन् १३११ ई० में बादशाह ने मुसल्मान मुग़लों को जो नोकर १३११ ई०
हो गये थे यकक़लम मौक़ूफ़ कर दिया। और जब उन्हों ने दंगा किया तो बिल्कुल पंद्रह हज़ार को क़त्ल कर के उनके बाल बच्चों को लौंडी गुलाम बनाके बेच डाला।

अलाउद्दीन को पढ़ना लिखना कुछ नहीं आता था। बादशाह होने के बाद पढ़ना सीखना शुरू किया पर तो भी घमंडी इतना कि अपने तईं सारी दुनया से बढ़कर पढ़ा लिखा और अक़्लमंद समझता था। मक़दूर क्या कि कोई उस की बात दुहरा सके कभी नया मज़हब चलाना चाहता कभी सारी दुनया को अपने तहत में लाने का मंसूबा बांधता। बिना उस की पर्वानगी न कोई सर्दार अपने बेटा बेटी का ब्याह कर सकता न दस पांच भाई बंद या दोस्त आशनाओं को अपने घर बुला सकता। मालगुज़ारी बढ़ायी गयी। ज़मीन की पैदावार में आधों आध बटायी होने लगी कुते और चलावर के लिये भी एक कौड़ी न छोड़ी। मुक़र्रर तादाद से ज़ियादा ज़मीन गाय बैल बकरी रखने की मनाही थी। जब बादशाह ने फ़ौज की तनख़ाह घटानी चाही सिपाहियों की ख़ातिर जिस

---

* अमीरख़ुसरव लिखते हैं कि अलाउद्दीन के बाद मलिक काफ़ूर ने ख़िज़रख़ां को अंधा करके ग्वालियर के क़िले में क़ैद किया था देवलदेवी उस के साथ थी मुबारकशाह ने जब ख़िज़रख़ां की क़त्ल के लिये जल्लाद भेजे लिपट गयी हाथ कटा चिहरा घायल हुआ पर अपने ख़ाविन्द को न छोड़ा उस के साथ क़त्ल हुई॥

सस्ती कर दी। सब चीज़ का निर्ख़ * सर्कार से मुक़र्रर हो गया। जो माल एक रुपये को बिकता था वह अब आठ ही आने का बाक़ी रहा। इस बादशाह की फ़ौज में पौने पांच लाख सवार गिने जाते थे। घोड़े दाग़े हुए सर्कार से और तनख़ाह में दो सौ चालीस रुपये साल पाते थे। जब मुग़लों ने आकर दिल्ली का शहर घेर लिया था। तीन लाख सवार और सत्ताईस सौ हाथी लेकर उन के मुक़ाबले को निकला था। सत्तर हज़ार इस के यहां शागिर्दपेशे थे उन में सात हज़ार मेमार बेलदार और गिलकार नौकर थे। बड़ी से बड़ी इमारत दो हफ़्ते में तय्यार करा सकता था। अब की तरह ठीके में कम मज़बूत काम नहीं बनवाता था। वह अपने तईं दूसरा सिकन्दर बतलाता था। बल्कि यह लक़ब सिक्के में भी खुदवा दिया था। बेशक यह बादशाह बड़ा ज़बर्दस्त हो गुज़रा निज़ामुद्दीन अहमद अपनी किताब तबक़ातिअकबरी में लिखता है कि इस ने तमाम वक़्फ़ और इनाम और मिल्क के गांव ज़ब्त कर लिये थे। और लोग यहां तक मुहताज हो गये थे कि पेट भर रोटी नहीं पाते थे। तो भी मक़्दूर क्या था कि किसी तरह की शिकायत ज़ुबान पर ला सकते। इतने जासूस मुक़र्रर थे कि शिकायत करने की तुह्मत में पकड़े जाने की दह्शत से लोग आपस में बात चीत भी बहुत कम करते थे।

१३१६ ई० निदान इस ने २० बरस से ऊपर बादशाही की। आख़िरी वक़्त में मुल्क के दर्मियान कुछ कुछ हलचल पड़ गयी। रामदेव के दामाद हरपाल ने दखन से बादशाही अमल उठा दिया। और गुजरात में भी बलवा हो गया।

---

* तवारीख़ फ़रिश्ता में लिखा है कि उस वक़्त दिल्ली में अब के हिसाब से एक रुपये का दो मन तो गेहूं बिकता था और पौने चार मन जव साढ़े सात सेर की मिसरी थी और तीस सेर का घी रुपये की ४० गज़ घटिया गज़ी मिलती थी और २००) से ५) तक गुलाम और लौंडी।

कुतबुद्दीन मुबारकशाह

قطب الدین مبارکشاہ

मलिक काफ़ूर को जिसे अलाउद्दीन ने खोजे और गुलाम से पहले दर्जे का अमीर बना दिया था उसके मरने पर अब होसिला तख़्त और ताज लेने का हुआ। अलाउद्दीन के दो बड़े लड़कों की तो आँखें निकलवा लीं लेकिन तीसरे मुबारकख़ां की जब जान लेनी चाही बादशाही सिपाहियों ने काफ़ूर ही को मार डाला॥ १३१० ई०

मुबारक ने तख़्त पर बैठते ही अपने छोटे भाई शहाबुद्दीन उमर को जो निरा बच्चा था और नाम के लिये मलिक काफ़ूर के कहने से तख़्त पर आ बैठता था अंधा कर दिया। गुजरात में फ़ौज भेजी दखन जाकर हरपाल को क़ैद कर लाया और जीते हुए की खाल खिंचवाकर भुस भरवा दिया। अब मुल्क में दबदबा जमा। बादशाह बिल्कुल ऐश में डूब गया॥ रात दिन नशे में चूर रहता। ज़नानी पोशाक पहनकर अमीरों के घर नाचने को जाता॥ जिन ऐबों को आदमी छुपाता है वह उन को खूब ज़ाहिर करने की कोशिश करता। कसबियों को बुलवाकर दर्बार में अपने बड़े बड़े अमीरों की बराबर बिठलाता कभी कभी नंगा मादरज़ाद बाहर निकल आता॥ निदान वह ऐसा बदनाम हुआ। कि आख़िर हिन्दू के एक छोकरे ख़ुसरवख़ां * के हाथ से जिसे उस ने गुलाम से वज़ीर बनाया था मारा ही गया॥ ख़ुसरव ने अला- १३२१ ई०
उद्दीन की औलाद में से किसी को भी बाक़ी न छोड़ा। अलाउद्दीन की बेगम को हरम बनाया और ताज सल्तनत का अपने सिर पर रक्खा॥ चार महीने तक दिल्ली में सिक्का ख़तबा इस हिन्दू के नाम का जारी रहा। और ज़ुब्दतुत्तवारीख़ के मुताबिक़ हिन्दुओं ने मुसल्मानियां रखकर और कुरान की चौकी और पीढ़ी बनाकर मस्जिदों में अपनी मूरतों का पूजन किया॥ लेकिन पंजाब के सूबेदार ग़ाज़ीख़ां तुग़लक़ ने जल्द ही आनकर उस का काम तमाम किया। और ख़िलजियों के ख़ानदान

---

* असल नाम इस हिन्दू बच्चे का किसी तवारीख़ में नहीं मिलता है लेकिन क़ौम का नीच अर्थात् लिखा है इस के भाई का नाम रनधौल था॥

में कोई लायक़ आदमी न रहने के सबब खल्क़त की ख़्वाहिश बमूजिब वह आपही तख़्त पर बैठा ॥

غیاث الدین تغلق

ग़यासुद्दीन तुग़लक़

ग़ाज़ीख़ां ने अपना नाम ग़यासुद्दीन रक्खा। यह ग़यासुद्दीन बलबन के गुलाम का बेटा था॥ मुल्क का अच्छा बंदोबस्त किया। दखन में बिदर फ़तह हुआ॥ वरंगुल का राजा क़ैद होकर दिल्ली आया। दिल्ली में तुगलक़ाबाद का क़िला इसी ग़यासुद्दीन ने बनाया॥ बंगाले की तरफ़ बादशाह खुद गया। वहां अब तक केक़ुबाद का बाप बग़राख़ां सूबेदार था फिरते वक़्त तिरहुत लेकर वहां के राजा को पकड़ लाया॥ बादशाह के बड़े बेटे फ़ख़्रुद्दीन जौना ने जिस का ख़िताब अलग़ख़ां था दिल्ली से निकल कर बाप से मिलने और जशन करने के लिये तीन रोज़ में
१३२५ ई० एक काठ का मकान बनवाया। लेकिन ऐन जशन में वह मकान गिर पड़ा और बादशाह पांच आदमियों के साथ दब कर मर गया॥ * अलग़ख़ां उस वक़्त मौजूद न था। इस लिये लोग उस पर यह भी शुबहा करते हैं कि बाप के मारने ही के वास्ते यह मकान बनाया था॥

الغ خان محمد تغلق

मुहम्मद तुग़लक़

अलग़ख़ां, मुहम्मद तुग़लक़ के नाम से तख़्त पर बैठा इनाम इक्राम में लाख रुपया लुटाया। हज़ार सुतून का महल बनाया॥ विद्या इसे अच्छी थी और हौसिलेवाला भी बड़ा था शराब नहीं पीता। और शरा यानी अपने धर्मशास्त्र को बहुत मानता॥ शुरू सल्तनत में इंतज़ाम भी मुल्क का अच्छा हो गया था। दखन वग़ैरः दूर दूर के सूबों को भी इस ने ज़ेर कर लिया था॥ लेकिन फिर ऐसे पागलपने के काम किये। कि लोग इसे मक्की और बावला समझने लगे॥ पहले तो इस ने

* تاریخ وفات غیاث الدین تغلق حیف سنہ ۷۲۵ ہجری

ईरान पर चढ़ाई करने का मंसूबा बांधा और तीन लाख सत्तर हज़ार सवारों का लश्कर इकट्ठा किया । लेकिन जब ख़र्च बढ़ने से ख़ज़ाना ख़ाली होगया तो एक लाख सवारों को नेपाल के पहाड़ों की राह खोज लेने के लिये रवाना किया । तांबे का रुपया चलाया । और रअय्यत पर महसूल बेठिकाने बढ़ाया । नतीजा यह निकला । कि लाख सवारों में से एक भी उन हिमालय के जंगल पहाड़ों में जीता न बचा । बेवपार बेवहार बिल्कुल बंद हो गया रअय्यत फिर गयी सूबे अक्सर हाथ से निकल गये । खेत बंजर पड़े लोग मरी और काल से मरने लगे । मुहम्मद ने अपनी फ़ौज को हुक्म दिया कि रअय्यत का शिकार करें । शेर के लिये जिस तरह हकुआ होता है चारों तरफ़ से घेर घेरकर मारें और सिर उनके काट काट कर क़िले के कंगूरों से लटकाने के लिये भेज दें । आप भी रअ-य्यत के शिकार में शरीक था और हज़ारों ही आदमियों का सिर कटवाया । लेकिन सब से बढ़कर पागलपने का काम जो उस ने किया वह यह था कि दिल्ली उजाड़कर देवगढ़ को दौलताबाद के नाम से अपना दारुस्सल्तनत यानी राजधानी बनाना चाहा । क्या आफ़त गुज़री होगी दिल्ली वालों के दिल पर जब इस पागल बादशाह ने हुक्म दिया कि जो आदमी हुक्म सुनते ही दिल्ली छोड़कर दौलताबाद न चला जायगा । बाल बच्चों समेत क़त्ल किया जायगा । निदान दौलताबाद तो न बसा । लेकिन दिल्ली का शहर अलबत्ता वीरान हो गया । २७ बरस की बादशाही के बाद ठट्ठे के पास बीमार पड़कर मरा ।* और यहां वालों का उस के जुल्म से गला छूटा । १३५१ ई०

फ़ीरोज़ तुग़लक़

فیروز تغلق

मुहम्मद तुग़लक़ के बाद फ़ीरोज़ तुग़लक़ उस का चचेरा भाई तख़्त पर बैठा । सिंध गुजरात और बंगाले पर चढ़ाइयां

* मरते वक्त उस ने यह शेर कहे थे

بسیار درین جہان چمیدیم ● بسیار نعیم و ناز دیدیم ● اسپان بلند بر نشستیم ●
ترکان گران بہا خریدیم ● کردیم بسے نشاط و آخر ● چون قامت ماہ نو خمیدیم ●

१३८५ ई० कीं पर उन से ऐसा कुछ फ़ाइदा हाथ न लगा। बुढ़ापे में वज़ीर ने चाहा था कि उस का जी बड़े बेटे नासिरुद्दीन मुहम्मद की तरफ़ से खट्टा कर दे लेकिन बेटे ने चालाकी की किसी ढब से महलों में जाकर अपने बाप के पैरों पर सिर रख दिया। बाप ने वज़ीर को उस के हवाले किया और सल्तनत का काम भी सब उसी को सौंप दिया। लेकिन नासिरुद्दीन को सल्तनत की अक़्ल न थी दो बरस भी नहीं गुज़रने पाये कि उस के दो भाइयों ने मिल कर बखेड़ा किया। नासिरुद्दीन सिरमौर के पहाड़ों की तरफ़ भागा।

१३८८ ई० इस अर्से में फ़ीरोज़ तुग़लक़ नव्वे बरस का होकर दुन्या से सिधारा। * जिन लोगों ने बखेड़ा किया था उन्हीं लोगों ने उस के पोते ग़यासुद्दीन तुग़लक़ को तख़्त पर बिठाया।

फ़ीरोज़शाह तुग़लक़ दिल्ली के बहुत नेकनाम बादशाहों में था कहते हैं कि उस ने ५० बंध बंधाये १५० पुल तय्यार कराये। ४० मसजिद और १०० सराय बनवायीं और तीस मदरसे और १०० शिफ़ाख़ाने यानी अस्पताल मुक़र्रर किये। सिवाय इस के उस ने यह भी एक बड़ा काम किया। कि जमना की नहर करनाल होकर हांसी हिसार को लाया। उस के पानी से लाखों बीघे ज़मीन सिंचती है। और हज़ारों आदमी की रोटी चलती है।

غیاث‌الدین تغلق ثانی

ग़यासुद्दीन तुग़लक़ (दूसरा)

ग़यासुद्दीन की उन्हीं लोगों से तकरार हुई जिन्हों ने उसे तख़्त पर बिठाया था। और आख़िर पांच ही महीने बाद १३८९ ई० उनके हाथ से मारागया।

ابوبکر تغلق

अबूबकर तुग़लक़

यह भी फ़ीरोज़शाह का पोता था। साल भर भी बादशाही न करने पाया कि नासिरुद्दीन ने पहाड़ों से निकलकर १३९० ई०

* تاریخ وفات فیروز تغلق ,وفات فیروز سنه ۷۹۰ هجری

इसे क़ैद कर लिया और तख़्त पर आप बैठा ॥ लेकिन इन्तिज़ाम मुल्क का कुछ न बन पड़ा। इस के मरने पर इसका बड़ा बेटा हुमायूं तुग़लक़ सिकन्दरशाह के लक़ब से बादशाह हुआ ॥ पर ४५ दिन के बाद जब यह भी मर गया। तो उसके छोटे बेटे महमूद तुग़लक़ ने ताज सल्तनत का अपने सिर पर रक्खा ॥ १३९४ ई०

नासिरुद्दीन महमूद तुग़लक़

ناصر الدین محمود تغلق

बादशाह लड़का था। गुजरात मालवा ख़ानदेश बिल्कुल दिल्ली के तहत से निकल गया था ॥ जौनपुर अलग होकर जुदा ही बादशाह बन बैठा था। मुल्क में हर तरफ़ बखेड़ा पड़ गया था ॥ आपस में एक दूसरे से लड़ता था। दर्बार में भी अच्छा न था ॥ कि इसी अर्से में समरक़न्द के बादशाह अमीर तैमूर ने जिसे तिमरलंग और साहिबक़िरां और गुरगां * भी कहते हैं और जो उसी ख़ानदान में था जिस में चंगेज़ख़ां हुआ तातारियों की फ़ौज लेकर हिन्दुस्तान पर चढ़ाई की काबुल से रवाना होता हुआ बेड़ों के पुल पर सिंध पार उतरा। और फिर तुलम्बा भटनेर और समाने को लूटता फूंकता क़त्ल करता दिल्ली के सामने आन पहुंचा ॥ रास्ते में जिन बेचारों को पकड़ता लाया था। यहां इस बेरहम संगदिल ने १५ बरस तक के लड़कों को गुलामी के लिये बचाकर एक लाख आदमियों का गला कटवाया ॥

महमूद गुजरात की तरफ़ भागा। दिल्ली में तैमूर के नाम का ख़ुतबा पढ़ा गया ॥ १३९८ ई०

तैमूर तो इस फ़तह की ख़ुशियां मनाता था और बड़ा भारी जश्न कर रहा था। और उसकी फ़ौज को लूट मार से काम था ॥ शहर में आग लगा दी थी शहर वाले क़त्ल होते

---

* گورگان شخصے کہ نسبتش بسلطان رسد و نسبت دامادی هم داشتہ باشد تاریخ ولادت تیمور ولد تیمور سنہ ۷۳۶ ہجری تاریخ وفات تیمور تیمورگان سنہ ۸۰۷ ہجری انگریزی تاریخوں میں تیمور کو ترک لکھا ہے اس کے دادا کا پردادا چنگیزخان کے بیٹے چغتائی خان کا امیرالامرا تھا •

थे। मुर्दों के ढेर से अकसर गलियों के रास्ते बंद हो गये थे। जब लूटने को कुछ बाक़ी न रहा और उसकी फ़ौज भी घास की तरह आदमियों की गर्दन काटते काटते थक गयी और जोड़ी गुलाम बनाने को लोगों की बहू बेटियां और लड़के भी ज़ाहिरा से ज़ियादा हाथ आ गये तैमूरलंग पन्द्रह दिन दिल्ली में रहकर मेरठ क़त्ल करता हुआ और हरिद्वार और जम्बू होता हुआ जिधर से आया था उसी तरफ़ को चला गया। हिंदुस्तान में अपने पीछे काल और मरी और हर एक बात की बेबंदोबस्ती छोड़ गया॥ हमारी समझ में तो चंगेज़ख़ां और तैमूरलंग इन दोनों जल्लाद का नाम दुनिया का दुश्मन रखना चाहिये। बल्कि इन को साक्षात ईश्वर का कोप कहना चाहिये॥

तैमूर के जाने के पीछे थोड़े दिनों तो दिल्ली उजाड़ सी पड़ी रही आख़िर महमूद गुजरात से आया। और फिर कुछ
१४१२ ई० दिन नाम की बादशाही करके इस जहान से सिधारा॥ महमूद
دولت خان لودی के मरने पर पंद्रह महीने तक दौलतख़ां लोदी ने डंका सल्तनत का अपने नाम से बजाया लेकिन ख़िज़्रख़ां सय्यद पंजाब के हाकिम ने उसे निकाल बाहर किया। और काम
خضر خان سید सल्तनत का तैमूर के नाम से अपने हाथ में लिया। सल्तनत काहे को थी ख़ाली नाम को दिल्ली रह गयी थी॥ चार पुश्त तक सय्यदों ने हुकूमत की। चौथी पुश्त में यानी सय्यद अलाउद्दीन के वक़्त में दिल्ली की अमलदारी कुल छ कोस के
سید علاء الدین घेरे में आरही॥

बहलूलख़ां लोदी उस वक़्त पंजाब का मालिक बन बैठा था। सय्यद अलाउद्दीन ने दिल्ली उस के हवाले करदी। और आप
१४५० ई० बदाऊं की राह ली॥

बहलूल लोदी

بہلول لودی

बहलूल के तख़्त पर बैठने से पंजाब फिर दिल्ली के शामिल होगया। और छब्बीस बरस की लड़ाई में बहलूल ने जौनपुर भी फ़तह किया॥

जब बहलूल मरा । तो दिल्ली की हद्द हिमालय से लेकर १४८८ ई०
बनारस तक पहुंच गयी थी बल्कि जमना पार बुंदेलखंड भी इसी के ताबे था ।

सिकंदर लोदी

असली नाम इस का निज़ामख़ां था । एक सुनारन से पैदा हुआ था । इस ने अपने बाप बहलूल की सल्तनत और भी बढ़ाई बिहार फ़तह किया मुल्क का किसी क़दर बंदोबस्त बांधा । आलिम फ़ाज़िलों की क़दर की लेकिन हिंदुओं पर बड़ा ज़ुल्म रवा रक्खा । उन की पोथियां तक अपनी अमल्दारी भर में बंद करदीं । जो शहर क़िला हाथ लगा मंदिर मूर्ति उस में की बिल्कुल तोड़ डालीं । एक ब्राह्मण ने इतना ही कहा था कि हिंदू मुसल्मान दोनों का मत अच्छा है इसी पर उस की जान ली । मथुरा में हिंदुओं की हजामत तक बंद करदी । तोभी यह बादशाह दिल्ली के अच्छे बादशाहों में गिना जाता है कबीर इसी के वक़्त में हुआ और फ़रंगियों का पहला जहाज़ यहां इसी के ज़माने में आया । अट्ठाईस बरस सल्तनत करके दुनिया से सिधारा * ।

---

* तारीख़ दाऊदी में लिखा है कि सिकंदर लोदी अस्र की नमाज़ के बाद मुल्ला लोगों के जल्से में जाता था और फिर क़ुरान पढ़ता था और शाम मग़रिब की नमाज़ मस्जिद में पढ़कर वज़ीफ़े के बाद घंटे भर के लिये हरमसरा में जाता था तमाम रात दीवानख़ास में बैठकर सल्तनत का काम करता था सत्तरह अहलकार हमेशा हाज़िर रहते थे आधी रात ढलने पर खाना मांगता था अहलकार हाथ धोकर सामने बैठ जाते थे यह दंगल पर रखता था और खाना एक बड़ी सी कुरसी पर चुना जाता था उन सत्तरह अहलकारों के आगे भी रक्खा जाता था लेकिन वह खाते न थे उठाकर घर लेजाते थे सालार मसऊद ग़ाज़ी के झंडे का मेला और मक़बरों में औरतों का जाना मौक़ूफ़ कर दिया था जो बाक़ीदारी की इल्लत में क़ैद होते थे ईद पर सब को छोड़ देता था जब किसी के लिये कुछ मुक़र्रर होजाता था फिर कभी उस में कुछ फ़र्क़ नहीं पड़ने पाता था शेख़ अबदुल्लफ़तह जौनपुर से गर्मियों में आया था

इब्राहीम लोदी

सिकंदर के पीछे उस का बेटा इब्राहीम लोदी तख़्त पर बैठा । लेकिन उस में अपने बाप के से गुण न थे जल्द ही अपने शक्की मिज़ाज और घमंड से सारे भाई बिरादर और सर्दारों को नाराज़ कर दिया मुल्क में हर तरफ़ बखेड़ा उठने लगा ॥ सूबेदार सर्कश होगये । बादशाह से मुक़ाबला करने लगे ॥ पंजाब के सूबेदार दौलतख़ां लोदी * ने अपनी मदद के लिये काबुल से बाबर को बुलाया । बाबर ने आते ही पहले तो लाहौर फूंका और फिर देबालपुर वालों को क़त्ल करता हुआ
१५२४ ई० सरहिंद के सामने आन पहुंचा ॥ इस अर्से में दौलतख़ां बिगड़कर पहाड़ों की तरफ़ भाग गया । इसी ख़याल से बाबर भी काबुल को लौट गया ॥ लेकिन जल्द ही बाबर ने फिर अपने घोड़े की बाग हिंदुस्तान की तरफ़ मोड़ी लाहौर के पहाड़ों में दौलतख़ां को सर करता हुआ रोपड़ की राह जब पानीपत में पहुंचा । तो वहां इब्राहीम लोदी को एक लाख सवार पियादे और हज़ार हाथी के साथ मुक़ाबले पर मुस्तइद पाया ॥ बाबर के साथ कुल बारह हज़ार आदमियों की जमइयत थी लेकिन फ़तह शिकस्त तो भगवान के हाथ है इब्राहीम इक्कीसवीं अपरैल को पंदरह सोलह हज़ार आदमियों के साथ लड़ाई में मारा गया । † और दिल्ली आगरा
१५२६ ई० बाबर के हाथ लगा ॥

इस लिये खाने के साथ छ घड़ा धर्मार्थ उस के पास भेजा गया फिर जब वह जाड़ों में आया तब भी छ घड़ा धर्मार्थ उसे पहुंचता रहा अमीरों के सब लड़कों को हुक्म था कि कुछ कसब सीखें और कारख़ाने जारी करें ॥

* कहते हैं कि यह दौलतख़ां लोदी उसी दौलतख़ां लोदी की औलाद में था जो महमूद तुग़लक़ के मरने पर कुछ दिनों दिल्ली का बादशाह बन बैठा था ॥

† नौ से ऊपर था पन्द्रह सौ । पानीपत में भारत दीसा ॥
अठवां रजब बार सुकवारा । बाबर जीत इब्राहीम हारा ॥

बाबर लिखता है कि उस रोज़ सुबह से तीसरे पहर तक लड़ाई होती रही। इस अर्से में कई बार उस के तोपख़ाने से आग उगी। आज कल तो अंगरेज़ी गोलंदाज़ एक मिनट में पांच फ़ैर करते हैं। गोले क्या ओले बरसाते हैं। बाबर को फ़तह उस के तीरन्दाज़ों के सबब से मिली। लेकिन हम जानते हैं कि इब्राहीम के साथ एक लाख सवार पियादे और एक हज़ार हाथी के बदले अगर थोड़ी कम्पनी भी इंग्लिश रफ़लवाले गोरों की होती बाबर के बारह हज़ार तीरन्दाज़ों के भगाने को काफ़ी थी।

ज़हीरुद्दीन मुहम्मद बाबर

बाबर तैमूर से छठी पुश्त में हुआ था उस की मां चंगेज़ख़ां के बेटे चग़ताईख़ां के ख़ानदान में महमूदख़ां मुग़ल की बहन थी। बाबर की नौजवानी बड़े लड़ाई झगड़ों में कटी। और उस ने ज़माने के बड़े ही ऊंच नीच और फेर फार देखे कभी तो समरक़न्द और बुख़ारे का बादशाह होता था। कभी पानी पीने को एक लोटा भी पास न रहता। बाप इसे बारह ही बरस का छोड़कर मरगया था एक दफ़ा मुसीबत की हालत में उस ने इरादा किया कि फ़क़ीर होकर चीन को चला जावे। लेकिन भगवान को तो यह मंज़ूर था कि उसी का पोता हिन्दुस्तान का बड़े से बड़ा और अच्छे से अच्छा बादशाह होवे और अंगरेज़ों के पहुंचने तक उसी के घराने में यहां की सल्तनत रहे। निदान बाईस बरस की उमर में समरक़ंद की बादशाही से नाउमेद होकर बाबर हिमालय उस पार काबुल में चला आया। काबुल उस के भाई भतीजों के हाथ था लेकिन उन दिनों बेदख़ल सा हो रहा था बाबर को वहां की सल्तनत हासिल करने में कुछ ऐसी दिक़्क़त न पड़ी बाईस बरस काबुल की बादशाही करके तब हिन्दुस्तान की तरफ़ क़दम बढ़ाये।

दिल्ली आगरा हाथ आने पर बाबर ने खूब दिल खोलकर धन दौलत बांटा अपने बेटे हुमायूं को तो ऊपर सब सौगातों का एक ऐसा हीरा दिया कि वैसा उस वक़्त सारी दुनिया में दूसरा न था और काबुल के मुल्क भर में मर्द औरत लड़के गुलाम लौंडी समेत सब को एक २ शाहरुख़ी इनआम जो क़रीब अठन्नी के बराबर होता है भेजा ।

थोड़े ही दिन बाद शाहज़ादा हुमायूं कुछ फ़ौज लेकर निकला । और बयाना धौलपुर ग्वालियर वग़ैरः सब मुल्क जौनपुर समेत बाबर के ताबे कर लिया ।

चित्तौड़ यानी मेवाड़ का राज इस वक़्त अपनी पूरी औज पर था । सांगा राणा गद्दी पर था । अजमेर से लेकर भिलसा चंदेरी तक उसी का डंका बजता था । जयपुर जोधपुर वग़ैरः सब जगह के राजाओं का वह सिरताज और पेशवा गिना जाता था । बड़ी भीड़ भाड़ लेकर बाबर के मुक़ाबले को आया । जब बयाने से आगे बढ़ा और फ़तहपुर सीकरी के बराबर बादशाही हरावल को शिकस्त देकर पीछे हटाया बाबर के साथियों का दिल सुस्त पड़ गया । और इसी अर्से में काबुल से एक नामी नजूमी यानी ज्योतिषी ने आकर यह मशहूर कर दिया कि मंगल सामहने है । बाबर के फ़ौज की बर्बादी यक़ीनी है । बाबर मंगल से तो न डरा । लेकिन अपनी फ़ौज के बेदिल होने से बहुत हिरासां हुआ । मन्नत मानी कि अगर सांगा पर फ़तह पाऊं । फिर कभी शराब न पीऊं और डाढ़ी बढ़ने दूं । बल्कि शराब पीने के सोने चांदी के पियाले उसी वक़्त मुहताजों को बांट दिये और अपने सिपाहियों से कहा कि यारो बेइज़्ज़ती के साथ पीठ दिखलाने से तो रन में सामने होकर मरना बिहतर है सब ने कुरान की क़सम खायी कि मर जायेंगे पर पीठ न दिखायेंगे निदान बाबर ने फ़तह पायी सांगा मुशकिल से अपनी जान लेकर भागा । जब वह नजूमी बाबर को फ़तह की मुबारकबाद देने आया दूसरा कोई होता ज़रूर क़त्ल करता हम भी उस का मुंह काला किये बग़ैर

हर्गिज़ न छोड़ते लेकिन बाबर ने उसे सलामत सलामत के साथ बहुत सा धन देकर आनी इतना कह दिया कि जा अब तू मेरे मुल्क से निकल जा ।

दूसरे साल बाबर मेदनीराय चंदेरीवाले पर चढ़ा । जब १५२८ ई०
बाबर के सिपाही क़िले में पहुंचे क़िलेवालों ने जौहर किया । पहले अपनी औरतों को मार डाला । फिर आप सब के सब कोई बाबर के आदमियों से लड़ के और कोई आपस में एक दूसरे के हाथ से कट मरे अपनी इज़्ज़त और धरम को बचाया ।

इसी साल बाबर ने अफ़ग़ानों से अवध और बिहार लिया । और रनथंभोर का क़िला भी उस के हाथ आ गया ।

बाबर ५० बरस की उमर में आगरे के दर्मियान दुनिया से सिधारा । * उस के मरने का सबब यों बतलाते हैं कि १५३० ई०
जब हुमायूं बहुत बीमार हुआ और हकीमों ने जवाब दिया बाबर ने हुमायूं के पलंग की तीन फेरी देकर यह दुआ मांगी कि या अल्लाह तू इसकी जान बख़्श और इस के बदले मुझे ले और इस दुआ का दोनों के दिल पर ऐसा असर हुआ कि हुमायूं तो उसी दम से अच्छा होने लगा और बाबर बीमार पड़ा । इस की क़बर इस के कहने मुवाफ़िक़ काबुल में एक बहुत सुंदर सुहावनी जगह में बनी है । वहां भी उस से बढ़कर दिलपसंद कोई दूसरी जगह लायक़ सैर के नहीं है ।

बाबर एशिया के अच्छे बादशाहों में था । अच्छा क्या यह तो कोई अजीब गुणों का गुज़रा । सज़ा कड़ी देता था । पर बे सबब कभी किसी को नहीं सताता था । अपना सारा हाल अपने हाथ से एक तुर्की किताब में लिख गया है । लायक़ देखने के है । वह लिखता है कि ऐसा सुख मैं ने उमर भर नहीं पाया । जैसा कुछ दिन समरकंद छोड़ने पर मिला । कि जब मुझ को फ़िकर और तरद्दुद से छुड़ाने के लिये कोई भी मनुष्य मेरे पास न थी पेट भर कर मैं ने उन्हीं दिनों में खाया । और गहरी नींद का भी मज़ा मैं ने उन्हीं दिनों में पाया । दुख

* تاریخ وفات بابر بهشت روزی باد سنه ۹۳۷ هجری

और मुझ तबीअत पर मौक़ूफ़ है यह उसी की तबीअत थी कि जिन हालतों में आदमी को जान की फ़िक्र पड़ती है वह अपनी किताब में जंगल और पहाड़ के फल फूलों का हाल और जो खूबियां उसे उन के देखने से हासिल होती थीं लिखता है यह उसी का काम था कि बादशाह होने पर भी लड़कपन के यार दोस्त और संगी साथियों की याद में दहाड़ें रोया करता। बीमारी से थोड़े ही दिन पहले कालपी से आगरे १६० मील दो दिन में घोड़े पर चला गया और गंगा जमना तैरकर कई बार पार उतरा था॥

हुमायूं

हुमायूं तख़्त पर बैठा। उस का एक भाई कामरां पहले से काबुल क़ंदहार का नाज़िम था बाक़ी हिंदाल और मिर्ज़ा अस्करी इन दो भाइयों को हुमायूं ने संभल और मेवात का नाज़िम बनाया॥ हुमायूं में कोई ऐसा ऐब न था कि हम उस को किसी बात का इल्ज़ाम दें आख़िर बाबर का बेटा था। लेकिन वह ऐसे थोड़े दिन के हासिल किये हुए मुल्क को दुश्मनों से बचाने और झटपट जोड़ तोड़ लगाकर और क़ाबू निकालकर इंतिज़ाम करने के वास्ते न था। आराम और इतमीनान के साथ सल्तनत बख़ूबी कर सकता। इसी लिये जब दुश्मनों ने सिर उठाया उन के दबाने में इस ने ऐसी बेमौक़ा देर की और उन्हें फ़ुर्सत दी कि वे ज़ोर पकड़ गये सब से ज़बर्दस्त इस का दुश्मन शेरख़ां था॥ उस का बाप हसनख़ां पठान सहसराम में ५०० घोड़ों का जागीरदार था। लेकिन सल्तनतों के हेर फेर में यह शेरख़ां ऐसा बढ़ा कि बिहार और बंगाला दबाकर उस ने हुमायूं के मुक़ाबिले का सामान किया॥ जब हुमायूं तख़्त पर बैठा चनार का क़िला शेरख़ां के क़ब्ज़े में था। हुमायूं पहले तो कालिंजर और जौनपुर में दुश्मनों से लड़ता भिड़ता गुजरात के बादशाह बहादुरशाह को शिकस्त देता और उस के मुल्क में दख़ल करता

खंभात तक चला गया था लेकिन जब ख़बर शेरख़ां के सर्कशी की सुनी गुजरात छोड़कर मुंह पूरब की तरफ़ फेरा॥ कहते हैं कि गुजरात में चंपानेर का क़िला दीवार की तरह एक बड़े पहाड़ पर बना है हुमायूं ३०० चुने हुए सिपाहियों को लेकर रात के वक़्त लोहे की मेख़ों पर जो पहाड़ में गाड़ दी थीं पैर रखता हुआ ऊपर पहुंच गया। और दुश्मनों से उसे ख़ाली करवा लिया॥ ख़ज़ाना बहादुरशाह का सिर्फ़ एक ही १५३४ ई०
आदमी को मालूम था। उस ने बतलाने में इन्कार किया॥ लोगों ने चाहा कि उस पर सख़्ती करें। और तकलीफ़ दें॥ लेकिन हुमायूं ने यह बात पसंद न की। और सलाह दी॥ कि इसे राज़ी करो। और ख़ूब शराब पिलाओ॥ जब वह नशे में आया। तो उसी दम जहां ख़ज़ाना गड़ा था बतला दिया॥

निदान चनार तक तो हुमायूं अपनी अमल्दारी में चला आया। लेकिन चनार का क़िला लेने में कई महीने का अर्सा लगा॥ शेरख़ां ने इस वक़्त मुक़ाबिला मुनासिब न समझा। अपने बालबच्चों को ख़ज़ाने समेत रोहतास * के क़िले में भेजकर क़ाबू का मुंतज़िर रहा॥ हुमायूं को बंगाले की राजधानी गौड़ तक चला आना सहल हुआ। लेकिन जब बरसात आयी नदी नाले सब भरगये हुमायूं के लश्कर में बीमारी फैली बहुतेरे आदमी बेहसिला और बेपरवाहगी नौकरी छोड़ छोड़कर आगरे को जाने लगे शेरख़ां शेर की तरह मांद में से निकला और बिहार बनारस चनार लेता हुआ जौनपुर जा घेरा॥ हुमायूं

---

* शेरख़ां ने यह क़िला बड़ी हिकमत से लिया वहां के राजा हरकृष्ण से कहला भेजा कि मैं मुहिम्म पर जाता हूं अपने बालबच्चे और ख़ज़ाना तुम्हारे पास भेज देता हूं राजा निहायत ख़ुश हुआ शेरख़ां ने पांच सौ चुने हुए जवान तो डोलियों में औरतों की जगह बिठलाकर और पांच सौ जवानों के सिर पर रुपये अशरफ़ी के नाम से पैसों के तोड़े रखकर रवाना किया और आप अपनी फ़ौज समेत घात में रहा जब इन्हों ने क़िले में पहुंचकर दर्वाज़ों पर क़ब्ज़ा किया शेरख़ां ने आकर क़िला ले लिया राजा खिड़की की राह भाग गया॥

को फ़िक्र आगरे पहुंचने की पड़ी। बक्सर से इधर आकर शेर-ख़ां से जो अब शेरशाह बनगया था शिकस्त खायी। हुमायूं ने घोड़ा गंगा में डाला। घोड़ा पार पहुंचने से पहले थक कर डूब गया। हुमायूं भी डूबने ही पर था। लेकिन निज़ाम नाम एक सक़्क़ा यानी भिश्ती मशक पर सवार उसके पास पहुंच
१५३९ ई० गया। इस लिये जान बच गयी। फ़ौज बिल्कुल ग़ारत हुई। हुमायूंनामे में यों लिखा है। कि इस सक़्क़े ने अपनी ख़िदमत के इनआम में आधे दिन की सल्तनत मांगी और जब हुमायूं ने उसकी ख़्वाहिश पूरी की उस ने आधे ही दिन में चमड़े का सिक्का चला दिया कि उस का चरचा आज तक चला जाता है॥

आगरे पहुंचकर हुमायूं ने फिर लड़ाई की तय्यारी की। इस अर्से में शेरशाह भी क़न्नौज के साम्हने पहुंच गया था हुमायूं
१५४० ई० ने पार उतरकर मुक़ाबला किया लेकिन फिर शिकस्त खायी। इस बार हाथी गंगा में डाला। कगारा इस पार बहुत ऊंचा था हाथी समेत हुमायूं के डूबने में कुछ बाक़ी न रहा था। पर दो सिपाहियों ने अपनी पगड़ी जोड़कर उस का एक सिरा कगारे पर से हुमायूं की तरफ़ फेंक दिया। उसे थाम कर वह किसी तरह ऊपर चढ़ आया। थोड़ी दूर चलकर हिंदाल और अस्करी उस के दोनों भाई भी कुछ बची हुई फ़ौज लेकर शामिल होगये। डर ज़मींदारों के हाथ से लुट जाने का था बड़ी मुश्किल से आगरे पहुंचे आगरे में भी अब ठहरना मस्लहत न जाना झट पट घर बार के लोगों को लेके लाहौर में कामरां के पास चलदिये। कामरां ने भाइयों के लिये शेरशाह से बैर बिसाहना मुनासिब न समझा। हुमायूं ने जब कामरां का रुख़ अपनी तरफ़ न पाया मुंह सिंध की तरफ़ किया। सिंध में भी हुमायूं से कुछ न बन पड़ा। ख़ाली हैरान परेशान इधर उधर घूमता रहा। जो उपाय मुल्क लेने का किया। बेफ़ाइदा हुआ। सिंध में हुमायूं ने बड़ी बड़ी मुसीबत और सख़्तियां उठायीं। रेगिस्तान में पानी बिना प्यास के मारे उस के साथियों में से

बहुतेरों ने जान दीं। क्या महिमा है सर्वशक्तिमान जगदीश्वर की कि इसी आफ़त और तकलीफ़ में १४ अक्तूबर को अकबर से बादशाह का जन्म हुआ। कि जिससे बढ़कर और नेकतर आज तक कोई मुसल्मान हिंदुस्तान के तख़्त पर नहीं बैठा॥ १५४२ ई०

कहते हैं कि हुमायूं हिंदुस्तान से आने से पहले एक दिन अपनी सौतेली मा यानी हिंदाल की मा के महल में खाने को गया था। वहां हिंदाल के उस्ताद एक सय्यद की कुमारी लड़की हमीदा ऐसी ख़ूबसूरत देखी कि रहा न जा सका उसी दम उस के साथ निकाह करलिया॥ अब जिस दिन अमरकोट से कूच हुआ उसी के दूसरे दिन वह अकबर जनो हुमायूं के पास उस वक़्त सिवाय एक मुश्क़नाफ़े के और कुछ भी देने को मौजूद न था। उसी को काटकर चुटकी चुटकी मुश्क यानी कस्तूरी बेटा होने की ख़ुशी में यह कहकर सब को बांटा॥ कि जैसा यह मुश्क ख़ुशबू दे। उसी तरह अकबर की तारीफ़ और नेकनामी भी सब तरफ़ फैले॥

उस वक़्त हुमायूं पर जो आफ़त और मुसीबत थी इसी एक बात से समझलेनी चाहिये कि हुमायूं ने अपनी बेगम हमीदा की सवारी के वास्ते किसी उहदेदार से एक घोड़ा जो उस के पास ख़ाली था मंगनी ले लिया था लेकिन जब उस उहदेदार का घोड़ा थका तो उस ने उसी दम हमीदा को उतरवा दिया। और अपना घोड़ा ले लिया॥ हुमायूं ने अपना हमीदा को दिया। और आप पैदल हुआ॥ कुछ दूर चलकर बोझे का ऊंट मिला। लाचार उसी के ऊपर बैठ लिया॥

निदान जब सिंध में किसी बात की कुछ उमेद न पायी और दुश्मन वहां भी सताने लगे तीन बरस ख़राबख़स्ता होकर हुमायूं ने इरादा क़ंदहार का किया। क़ंदहार में उस १५४३ ई० वक़्त अस्करी कामरां की तरफ़ से था॥ लेकिन जब क़ंदहार १२० मील रह गया एक सवार ने दौड़कर ख़बर दी। कि अस्करी फ़ौज लेकर गिरफ़्तार करने के लिये आता है हुमायूं

को अकबर के उठाने की भी फ़ुर्सत न मिली। हमीदा को लेकर गर्मसेर और सीस्तान होता हुआ ईरान की अमलदारी में चला गया। थोड़ी ही देर बाद अस्करी पहुंचा लेकिन हुमायूं को न पाया। तब दोस्ती की बातें ज़ाहिर करने लगा। और अकबर को बड़ी महब्बत से क़ंदहार लेगया। ईरान के तख़्त पर उस वक़्त तहमास्पशाह सफ़वी था हुमायूं की बड़ी ख़ातिर्दारी की। और मुलाक़ात के वक़्त सब बात में बराबर की इज़्ज़त दी। लेकिन अपना शीआ मज़हब क़बूल कराने को साम दाम दंड भेद सब कुछ दिखलाया। हुमायूं को यह बहुत बुरा लगा। पर इलाज कुछ न था। मुन्तख़बुत्तवारीख़वाला तो लिखता है कि हुमायूं ने ज़ाहिरा उस मज़हब को क़बूल कर लिया था और नमाज़ भी उसी तौर पर पढ़ता था। लेकिन हम इतना ही कह सकते हैं कि वह शेख़ सफ़ीयुद्दीन की जिसे शाहसफ़ी भी कहते हैं दर्गाह की ज़ियारत को अर्दबील बेशक गया था। और यह काम पक्के सुन्नियों के तरीक़ से अलबत्ता बख़िलाफ़ था।

१५४५ ई० निदान तहमास्पशाह ने क़ंदहार मिलने के वादे पर १४००० सवार अपने लड़के मुराद मिर्ज़ा के साथ हुमायूं की मदद को दिये क़ंदहार में उस वक़्त कामरां की तरफ़ से मिर्ज़ा अस्करी हाकिम था। पांच महीने घिरे रहने के बाद बेक़ाबू होकर हुमायूं के पास हाज़िर होगया। हुमायूं ने पहले तो बड़ी ख़ातिर्दारी की लेकिन फिर किसी पुराने क़सूर के बहाने से उस के पांव में बेड़ी डालकर क़ैद करदिया। क़िला क़ंदहार का और जो कुछ उस में ख़ज़ाना था सब ईरानियों के हवाले किया। लेकिन जब बहुत से ईरानी अपने मुल्क को लौट गये और मुराद मिर्ज़ा भी मरगया हुमायूं धोखा देकर क़िले में घुसा। और बहुतेरे ईरानियों को क़त्ल करके बाक़ी को बाहर निकाल दिया वे बेचारे ईरान चले गये क़ंदहार हुमायूं के क़ब्ज़े में रहा। अबुल्फ़ज़्ल * हुमायूं को इस दग़ाबाज़ी की बदनामी से बचाने

* अकबर का वज़ीर था

के लिये लिखता है कि ईरानी क़ंदहार में ज़ुल्म करते थे लेकिन उस को शर्म नहीं आती कि जब मदद की क़ीमत में क़ंदहार ईरानियों को दे दिया था। तो फिर उन के ज़ुल्म और इंसाफ़ से हुमायूं को क्या मतलब था॥

क़ंदहार लेने के बाद हुमायूं ने काबुल पर चढ़ाई की रास्ते में हिंदाल भी आ मिला। कामरां सिंध की तरफ़ भागा॥ हुमायूं ने अकबर को कि अब दो ढाई बरस का होगया था छाती से लगाया। लेकिन जब हुमायूं बदख़्शां सर करने को गया कामरां ने फिर काबुल ले लिया काबुल के साथ अकबर भी उस के हाथ आया॥ जब हुमायूं ने लौटकर काबुल घेरा और गोला चलाना शुरू किया। तो कहते हैं कि कामरां ने अकबर को भाले से बांध कर क़िले की दीवार पर खड़ा करदिया॥ लेकिन कहावत मशहूर है कि मारनेवाले से बचानेवाला ज़बर्दस्त है अकबर को कुछ भी आंच न पहुंची कामरां को फिर भागना पड़ा। दूसरे साल थक कर हुमायूं १५४० ई०
के पास चला आया॥ हुमायूं ने इस वक़्त बड़ी हिम्मत दिखलायी। मिर्ज़ा अस्करी को भी क़ैद से छोड़ दिया चारों भाइयों ने साथ बैठकर नमक खाया और इस मेल मिलाप की बड़ी ख़ुशी मनायी॥ १५४९ ई०

लेकिन जब हुमायूं बदख़्शां की तरफ़ गया। कामरां ने बिगड़कर फिर काबुल पर क़ब्ज़ा किया और अकबर तीसरी दफ़ा उस के हाथ पड़ा॥ जब हुमायूं लौटा। कामरां लड़ाई में शिकस्त खाकर हिंदुस्तान की तरफ़ भागा॥ पर गक्खरों
के * सर्दार ने उस के साथ दग़ा की पकड़कर हुमायूं के हवाले १५५३ ई०
करदिया। दो दिन तो हुमायूं ने कामरां की बड़ी ख़ातिरदारी की लेकिन तीसरे दिन उसे अंधा करने का हुक्म दिया॥ जहां तक उस की आंख में निश्तर लगाये गये वह कुछ नहीं बोला लेकिन जब नमक डालकर नीबू निचोड़ा गया चिल्ला

---

* गक्खर वे ही हैं जिन्हें संस्कृत में केकय कहते हैं और अब कश्मीर की अमलदारी में कक्का के नाम से शामिल हैं॥

उठा ऐ ख़ुदावंद करीम जो कुछ मैंने गुनाह किये थे पूरी सज़ा पाचुका अब आक़िबत में मुझ पर रहम कर कामरां अंधा होकर मक्के को चला गया। और हुमायूं काबुल क़ंदहार की बेखटके हुकूमत करने लगा॥

شیرشاه

शेरशाह सूर

१५४० ई० हुमायूं के भागने पर इस मुल्क का बादशाह शेरशाह हुआ। कामरां के काबुल चले जाने पर पंजाब भी आ दबाया॥ और झेलम पार एक पहाड़ी पर रोहतास उसी नाम का और वैसा ही मज़बूत एक क़िला बनाया। कि वैसा उस की जनमभूम बिहार में था॥

१५४२ ई० मालवा फ़तह होने पर इस ने रायसेन के क़िले वालों के साथ बड़ी बेईमानी की उन्हें जान की अमान देकर क़िले से बाहर निकाला। लेकिन फिर मौलवियों से फ़तवा लेकर सब को कटवा डाला॥ फल इस बेईमानी का शेरशाह को इसी दुनया में मिल गया। यानी जब इस ने कालिंजर का क़िला घेरा और क़िलेवालों को जान की अमान के वादे पर क़िला ख़ाली करदेने का पयाम भेजा उन्हों ने यही जवाब दिया कि तू ने रायसेनवालों से भी तो वैसा ही वादा किया था अब तेरी बात का एतबार नहीं रहा॥ और फिर खिझकर ऐसा गोला मारना शुरू किया कि शेरशाह का मेगज़ीन उड़ गया। और उस की आग से ऐसा झुलसा कि उसी दिन निहायत तकलीफ़ के साथ दुनया से सिधारा *॥

१५४५ ई० शेरशाह यहां के अच्छे और अक़्लमंद बादशाहों में गिना जाता है ज़माने मुताबिक़ मुल्क का इंतिज़ाम भी ख़ूब किया था। और बंगाले से पंजाब तक ऊंची सड़क बनवाकर मंज़िल मंज़िल पर सराय और कोस कोस पर कूआ खुदवा दिया था॥ कहते हैं कि सरायों में ग़रीबों को खाना मिलने का भी बंदोबस्त किया गया था हिंदू के लिये हिंदू और

---

* تاریخ وفات شیرشاه ز آتش مرد سنه ۹۵۲ هجری

मुसल्मान के लिये मुसल्मान नौकर मुक़र्रर थे। और सड़क पर दुतरफ़ा दरख़्त भी लगाये गये थे *।

सलीमशाह सूर †

سلیم شاہ سور

शेरशाह के बाद नव बरस तक उस के बेटे सलीमशाह ने जिसका असली नाम जलालख़ां था बादशाही की इसे भी इसके बाप की तरह नेकनाम बतलाते हैं। दिल्ली में सलीमगढ़ इसी का बनाया अब तक मौजूद है हुमायूं के ख़ानदान वाले उसे नूरगढ़ कहते हैं। جلال خان

√ मुहम्मदशाह अदली

محمد شاہ عدلی

सलीमशाह के मरने पर उस का चचेरा भाई मुबारिज़ख़ां उस के बेटे को जो कुल बारह बरस का था मारकर मुहम्मदशाह आदिल के लक़ब से तख़्त पर बैठा। यह बड़ा नादान १५५३ ई०
और बदकार था। सल्तनत का बिल्कुल काम हेमू नाम एक बनिये को सपुर्द कर दिया था। ख़ज़ाना जल्द ही ख़ाली होगया सर्दारों की जागीरें ज़ब्त करने लगा। लोग निहायत नाख़ुश और बेदिल होगये। अदली यानी आदिल के बदले उसे अंधली यानी अंधा पुकारने लगे। मुल्क में हर तरफ़ बलवा हो गया। जहां जो था मालिक बन बैठा। उसी के ख़ानदान के १५५४ ई०
एक आदमी इबराहीम सूर ने दिल्ली आगरा ले लिया। दूसरे आदमी सिकंदर सूर ने पंजाब में अपने नाम का डंका बजाया। मुहम्मदशाह पूरब को चला। लेकिन पूरब में भी तीसरे आदमी मुहम्मदसूर ने बंगाला अपने क़ब्ज़े में कर लिया।

√ हुमायूं की दूसरी सल्तनत

हुमायूं को यह मौक़ा फिर हिंदुस्तान में आने का बहुत १५५५ ई०
अच्छा मिला। १५००० सवार लेकर सिंधु नदी पार उतरा पहले

---

* तारीख़ शेरशाही में लिखा है कि इस के बावर्चीख़ाने का ख़र्च पांच सौ अशरफ़ी रोज़ था हज़ारों सवार सिपाही फ़क़ीर कंगालों को सदा उस के बावर्चीख़ाने से खाने को मिला करता था।

† असली लक़ब इस का इस्लामशाह था।

लाहौर लिया और फिर सरहिंद में सिकंदर सूर को शिकस्त देकर दिल्ली आगरे में क़ब्ज़ा किया ॥ लेकिन मौत ने उसे ज़ियादा दिन इस दुबारा हिंदुस्तान की सल्तनत मिलने का सुख न भोगने दिया। दिल्ली लेने से छ ही महीने के अंदर पैर फिसलने के सबब सीढ़ी से गिरकर उनचास बरस की उमर में इस दुनया से कूच कर गया * ॥

ابوالمظفر جلال الدین محمد اکبر شاہ अबुल मुज़फ़्फ़र जलालुद्दीन मुहम्मद अकबरशाह †

बादशाह अकबर उस वक़्त कुल तेरह बरस चार महीने का लड़का था। लेकिन होशयारी और जवांमर्दी में बड़े बड़े जवानों के कान काटता था ॥ बैरमख़ां ‡ ख़ानख़ानां जो हुमायूं का बड़ा मातबर सर्दार था। सल्तनत का काम अंजाम देने लगा अकबर ने उसे ख़ांबाबा का ख़िताब दिया ॥

बैरम अकबर के साथ पंजाब में सिकंदरसूर को क़ाबू में लाने की फ़िक्र कर रहा था। लेकिन जब ख़बर सुनी कि हेमू § बनिया मुहम्मदशाह अदली का वज़ीर मुहम्मदसूर को मारकर और आगरे दिल्ली को अपने क़ब्ज़े में लाकर तीस हज़ार फ़ौज के साथ लाहौर की तरफ़ बढ़ा आता है तुर्त पानीपत के मैदान में लड़ाई के दर्मियान उसे जीतकर क़ैद कर लिया ॥ बैरम ने चाहा कि अकबर अपनी तलवार उस के ख़ून से लाल करे और ग़ाज़ी कहलावे लेकिन अकबर दाता मर्दुमी का ख़ज़ाना था। बोला कि घायल क़ैदी पर तो मैं हर्गिज़ हाथ नहीं उठाऊंगा ॥ तब बैरम ने गुस्से में आकर नाचार अपने हाथ से उस का सिर काट डाला। दिल्ली आगरा फिर अकबर के क़ब्ज़े में आया ॥

बैरम बड़े दबदबे का आदमी था यह ख़ाली इस की हिम्मत और मुस्तइदी थी। कि सल्तनत तैमूर के घराने में रही ॥ लेकिन अपने आगे किसी दूसरे को कुछ चीज़ नहीं समझता

---

* تاریخ وفات همایون ع همایون بادشاه از بام افتاد سنه ۹۶۲ هجری

† تاریخ جلوس اکبر ع جلوس خداوند عالم پناه سنه ۹۶۳ هجری

‡ असली नाम बैरामख़ां है तुर्की में बैराम ईद को कहते हैं ॥

§ रिवाड़ी का रहनेवाला दूसर बनिया था ॥

या दुश्मन दर्बार में बढ़ गये। जब बाहर के लड़ाई झगड़ों का ऐसा ज़ोर बाक़ी न रहा बादशाह के कान भरने लगे। बादशाह भी अब जवान होता चला था। बिल्कुल बैरम के हाथ में रहना पसंद नहीं करता था। और बैरम ने ग़ुस्से में आकर दो चार काम भी ऐसे किये। कि वह बादशाह को बहुत बुरे मालूम हुए। निदान अक्बर शिकार के बहाने बैरम के क़ाबू से निकल कर दिल्ली चला गया और एक इश्तिहार जारी किया। कि अब सल्तनत का काम मैंने अपने हाथ में लिया। सिवाय मेरे हुक्म के कोई किसी दूसरे का हुक्म न माने तब तो बैरम की आंखें खुलीं मक्के चले जाने का इरादा किया लेकिन गुजरात के पास पहुंचकर दिल बदल गया। कुछ सिपाही जमा करके पंजाब पर चढ़ दौड़ा। और जब बादशाही फ़ौज ने उसे शिकस्त दी। तो अक्बर से अपने क़ुसूर की मुआफ़ी चाही। आकर पैरों पर गिर पड़ा। और रोने लगा। अक्बर ने उसे अपने हाथ से उठाया। और दाहनी तरफ़ बैठाया। और कहा कि चाहो कोई सूबा लो चाहो पहले दर्जे के सर्दार होकर दर्बार में रहो चाहो मन-मानती पिंशन लेकर मक्के को जाओ। बैरम की ग़ैरत ने हिन्दुस्तान का रहना क़बूल न किया। मक्के जाने की इजाज़त मांगी लेकिन गुजरात पहुंचकर एक पठान के हाथ से जिस के बाप को उसने किसी लड़ाई में मारा था मारा गया। १५६० ई०

अक्बर ने जो इस अठारह बरस की नौजवानी में सारी सल्तनत का बोझ अपने सिर पर उठाया। लोगों को उस की ताक़त से बिल्कुल बाहर मालूम होगा। लेकिन याद रखना चाहिये कि कैसी आफ़त में तो उस का जन्म हुआ। और कैसी क़ैद में वह पाला गया। अपने बाप के साथ लड़ाइयों में रहकर वह दिलेर क्योंकर न होता। और बैरम से सख़्त मिज़ाज आदमी के तहत में रहकर वह हर दम होशयार रहना क्योंकर न सीखता। बदन उसका बहुत सुडौल और ज़ोर और फुर्ती से भरा हुआ था। रंग गोरा था। बातें उस की

दिल को लुभाती थीं। दिल्लगियां भी उसकी हाथी घोड़ों के फेरने और शेरों के शिकार करने में थीं। लेकिन उसने अपनी नेकनामी की उमेद ऐसी लड़ाइयों के जीतने पर नहीं बांधी। जैसी अपनी रइय्यत के सुख चैन देने से रक्खी।

ग़ज़नी और ग़ोर वाले बादशाह तो पास होने के सबब अपने मुल्क वालों से भी मदद ले सकते थे। लेकिन तैमूर के ख़ान्दान वाले तब तक यहां निरे परदेसी थे। अक्बर अपनी आंखों से देख चुका था। कि यहां वालों ने कैसा झटपट उस के बाप को निकाल दिया। निदान अक्बर ने अपनी नेक मिज़ाजी से यह पक्का मंसूबा बांधा कि न तो मज़हब का कुछ ख़याल करे। और न रंग और क़ौम का जो लोग इस देस में बसते हैं सब को दिल जान से अपना कर ले। उस के वक़्त में मुसल्मान और हिंदू दोनों को अपनी अपनी लियाक़त बमूजिब बड़े से बड़े उहदे मिलते रहे। और यही सबब था कि तमाम आदमी बाप से भी ज़ियादह उसे चाहने लगे।

बैरम के रहते ही अक्बर का अमल पूरब में जौनपुर तक पहुंच गया था। और ग्वालियर और अजमेर का क़िला भी हाथ आ गया था।

मालवा अब तक पठान बादशाहों के सूबेदार बाज़बहादुर के क़ब्ज़े में था। अक्बर ने आदमख़ां को कुछ फ़ौज के साथ उधर रवाना किया। बाज़बहादुर जब शिकस्त खाके भागा उस की औरत जिसे लोग पद्मिनी कहते हैं आदमख़ां के हाथ पड़गयी। उस ने उसे अपने महलों में दाख़िल करना चाहा लेकिन वह बिचारी इस ख़बर के सुनते ही ज़हर खाकर सो
१५६१ ई० रही। मालवा १५६१ ई० में बिल्कुल फ़तह हो गया। और बाज़बहादुर अक्बर के अमीरों में दाख़िल हुआ।

अक्बर ने आमेर यानी जयपुर के राजा की बेटी ब्याही थी इस लिये वह और उस का बेटा भगवान्दास

* और भगवानदास का भतीजा और पुष्यपुत्र मानसिंह सदा अकबर के तरफ़दार रहे जोधपुर के राजा की लड़की से भी अकबर ने ब्याह किया था। जब तक मालदेव गद्दी पर रहा कुछ सर्कशी सी करता रहा लेकिन उस के पीछे उस का बेटा अकबर की ख़िदमत में हाज़िर होगया। चित्तौड़ यानी उदयपुर के राना पर अकबर ने चढ़ाई की राना उदयसिंह जी का बोदा था। क़िला छोड़ कर जंगल पहाड़ों में जाघुसा। लेकिन जयमल क़िलेदार ने अकबर का ख़ूब मुक़ाबला किया। आख़िर एक दिन रात को जयमल मिशाल के उजाले से बुर्जों की मरम्मत करा रहा था अकबर ने जो क़िला घेरे हुए पड़ा था पहचान लिया। तक कर ऐसा निशाना मारा। कि जयमल उसी जगह लोट गया। ऐसे बहादुर क़िलेदार के मारे जाने से राना की फ़ौज बिल्कुल बेदिल हो गयी औरतों को जो क़िले में थीं जयमल की लाश के साथ चिता पर बिठला कर जला दिया. और आप तलवारें सूंतकर और केसरिये बागे पहनकर क़िले से बाहर निकल आये। कहते हैं कि उस वक़्त कम से कम आठ हज़ार आदमी मुसल्मानों के हाथ से क़तल हुए। जीता एक भी न बचा † हां कुछ थोड़े से आदमी अपने लड़के और अपनी औरतों को क़ैदियों की तरह बांध बांध कर बादशाही फ़ौज के बीच से होते हुए अलबत्ता निकल

---

* भगवानदास की बेटी सलीम को ब्याही थी अकबर आप बरात के साथ भगवानदास के मकान पर गया था और वहां हिन्दुओं के दस्तूर मुताबिक़ आग के गिर्द फेरे फिर कर ब्याह हुआ था बहू के डोले पर रुपये अशरफ़ियां लुटाता आया भगवानदास ने सौ हाथी कई तवेले घोड़े बहुतेरे लौंडी गुलाम सोने चांदी जवाहिर के असबाब हथियार बरतन दहेज में दिये अमीरों को जो बराती थे इराक़ी तुरकी ताज़ी सोने चांदी के साज़ समेत घोड़े दिये।

† टाड साहिब अपनी किताब में लिखते हैं कि मुर्दों के जनेऊ साढ़े चौहत्तर मन तौले गये थे चिट्ठियों पर अब तक यही निशान लिखा जाता है लेकिन मन चार सेर का था।

गये। बादशाही फ़ौज वालों ने यह जाना कि हमारे ही आदमी क़िलेवालों के बाल बच्चे पकड़े लिये जाते हैं इस लिये कुछ न बोले ॥ राना चित्तौड़ टूट जाने पर भी जंगल पहाड़ों में घुसा रहा। नव बरस पीछे उस के बेटे और जानशीन राना प्रताप को वह जंगल पहाड़ भी छोड़कर सिंध की तरफ़ भागना पड़ा ॥ पर जो उस ने हिम्मत की। तो भगवान् की तरफ़ से उसे मदद पहुंची ॥ अक्बर के मरने से पहले ही उसने अपना बहुत सा मुल्क फिर अपने क़ब्ज़े में कर लिया। और अपने बाप के नाम पर उदयपुर का शहर बसाया ॥

गुजरात जो मुद्दत से जुदा बादशाहों के क़ब्ज़े में चला
१५७३ ई० आता था सन १५७३ ई० में अक्बर के हाथ आया। और सन
१५७६ ई० १५७६ ई० में बंगाला और बिहार भी फ़तह होगया ॥ पठान बादशाह जो वहां ढाई चावल की जुदा खिचड़ी पकाते थे। अब नाम निशान को भी बाक़ी न रहे ॥

कश्मीर चौदहवीं सदी के शुरू से मुसल्मानों के क़ब्ज़े में चला आता था। हिंदुओं का राज बिलकुल नाश हो गया था ॥
१५८६ ई० सन १५८६ ई० में अक्बर ने उसे हिंदुस्तान की सल्तनत में मिलाया। इसी साल राजा बीरबल जो अक्बर का नामी मुसाहिब था सिंध पार युसुफ़ज़ाइयों की लड़ाई में मारा गया ॥

१५९२ ई०. सन १५९२ ई० में सिंध के हाकिम ने जो अब तक ख़ुद मुख़्तार रहा था ज़ेर होकर अक्बर की इताअत क़बूल की। और वह भी मीरास इस बादशाह के इख़्तियार से बाहर न रही ॥ कहते हैं कि यह सिंध का हाकिम लड़ाई के लिये पुर्टगीज़ सिपाही भी साथ लाया था। और दो सौ हिंदुस्तानियों को अंगरेज़ी जामा पहनाया था ॥ यानी गोरे और तिलंगे * उस की फ़ौज में मौजूद थे इन के नाम इस मुल्क की फ़ौज में इसी जगह से सुनने में आये ॥

---

* पहले मंदराज में तैलंग देस के आदमी अंगरेज़ी फ़ौज में भरती हुए थे इसी लिये यहां वाले पल्टन के सिपाहियों को तिलंगा पुकारने लगे ॥

दखन में जो मुद्दत से अहमदनगर और बिजयपुर यानी बीजा- १५९५ ई०
पुर और गोलकुंडे के जुदा जुदा बादशाह होते चले आते थे। अहमदनगर में इत्तिफ़ाक़ से चार दावेदार खड़े हुए। एक ने जो उस वक़्त अहमदनगर में था अकबर से मदद मांगी इस ने ऐसे मौक़े को ग़नीमत समझ कर शाहज़ादे मिर्ज़ामुराद को बैरम के बेटे मिर्ज़ा अबदुर्रहीमख़ां ख़ानख़ाना के साथ फ़ौज ले कर अहमदनगर जाने का हुक्म दिया। लेकिन जब तक वे लोग पहुंचे अहमदनगर दूसरे दावेदार बहादुर निज़ामशाह के क़ब्ज़े में आ गया। यह तो लड़का था लेकिन इस की चची चांदसुल्ताना बड़ी दाना और दिल की दिलेर थी। इस क़िस्म की औरत इस मुल्क में कम सुनी गयी है जिस वक़्त अकबर की फ़ौज सुरंग उड़ाकर क़िले पर चढ़ने लगी चांदसुल्ताना मुंह पर नक़ाब डालकर और हाथ में नंगी तलवार लेकर जहां सुरंग उड़ायी गयी थी आकर खड़ी हो गयी। और चिल्लाकर अपने आदमियों से कहने लगी कि अब ऐसे वक़्त में औरत न बनो। निदान उस दम अहमदनगर में ऐसा कोई न था जो उसकी मदद को न पहुंचा हो। अकबर की फ़ौज क़िले पर न चढ़ सकी। और बराड़ का इलाक़ा ले कर जो अहमदनगर वाले ने कुछ दिनों से अपने क़ब्ज़े में कर लिया था चांदसुल्ताना से सुलह कर ली। लेकिन चांदसुल्ताना ने मुहम्मदख़ां को पेशवा के ख़िताब से अपना वज़ीर मुक़र्रर किया था वह उस से फिर गया। और उस ने फिर शाहज़ादे मिर्ज़ामुराद को अहमदनगर में बुलाया। शाहज़ादे मिर्ज़ामुराद से तो कुछ न बन पड़ा लेकिन जब अकबर ने शाहज़ादे दानियाल और ख़ानख़ानां को भेजा और बुरहानपुर तक आप भी आया। तो इस दफ़ा अहमदनगर के सिपाहियों ने बलवा करके चांदसुल्ताना को मार डाला। अकबर की फ़ौज को क़िले में घुस जाना और उसे अपने दख़ल में कर लेना पहली बार का सा मुश्किल न रहा। क़िलेवाले सब मारे गये और बहादुर निज़ामशाह क़ैद रहने के लिये ग्वालियर के क़िले में भेजा गया।

अकबर अभी बुरहानपुर ही में था कि उसे अपने बड़े लड़के सलीम यानी * शाहज़ादे सलीम के बाग़ी हो जाने की ख़बर पहुंची यह अब तीस बरस का हो गया था और सब तरह से लायक़ था। लेकिन शराब और अफ़यून ने उस का दिमाग़ बिगाड़ दिया था। यह आप अपनी किताब में लिखता है कि मैं जवानी की हालत में हर रोज़ कम से कम बीस पियाले शराब पीता था अगर घंटा भर भी बे शराब गुज़रता। तो मेरा हाथ कांपने लगता। लेकिन अब है मैं तख़्त पर बैठा कुल पांच पियाले पर किफ़ायत करता हूं। और सो भी रात के वक़्त पीता हूं।

निदान अकबर तो दखन की लड़ाइयों का बंदोबस्त कर रहा था शाहज़ादे सलीम ने डंका बग़ावत का बजाया। और इलाहाबाद लेकर सूबे अवध और बिहार में भी अपना क़ब्ज़ा कर लिया। अकबर ने लड़के पर सख़्ती करना मुनासिब न जाना। नर्मी के साथ फ़हमाइश का ख़त लिखा और आप भी जल्द आगरे को चला आया। सलीम ने बहुत मिन्नत समाजत के साथ अपने बाप को जवाब लिखा। और क़दमबोसी हासिल करने को आगरे रवाना हुआ। लेकिन जब इटावे में पहुंचा अकबर ने मालूम किया कि सलीम के साथ सिपाह बहुत है हुक्म भेजा कि अगर मुझे देखा चाहते हो अकेला चले आओ। नहीं तो इलाहाबाद लौट जाओ। सलीम इलाहाबाद लौट गया। और फिर थोड़े ही दिनों बाद अकबर ने सूबे बंगाला और उड़ेसा उसके हवाले किया।

सलीम को अकबर के वज़ीर अबुलफ़ज़ल से बड़ी दुश्मनी थी जब वह दखन की मुहिम्म से लौटकर आगरे की तरफ़ आता था सलीम की मर्ज़ी बमूजिब उड़छा के राजा नरसिंहदेव ने उस का सिर काट के सलीम के पास भेज दिया। अकबर को अबुलफ़ज़ल के मारे जाने का बड़ा रंज हुआ दो दिन रात न कुछ खाया न सोया पर उसे यह न मालूम हुआ कि

---

* युवराज ॥

अबुलफ़ज़ल का ख़ून उसी के बेटे की गर्दन पर था। सन १६०२ ई० १६०२ ई०
में सलीम अकबर के पास हाज़िर भी हुआ था अकबर बहुत
मिहर्बानी के साथ पेश आया। सन १६०४ ई० में फिर हाज़िर हुआ। १६०४ ई०

अकबर का दूसरा लड़का मुराद कई बरस हुए मर गया
था। अब तीसरे लड़के दानियाल के मरने की ख़बर पहुंची १६०५ ई०
यह भी शराब बहुत पीता था। जब बीमार पड़ा और अकबर
ने उस के पास शराब जाना बंद किया वह अपने नौकरों से
बंदूक़ की नलियों में भर कर शराब मंगवाता था। मर गया पर
इस से परहेज़ न कर सका। यह बुरी बला है जब बढ़ती है।
जान ही लेकर छोड़ती है। निदान अकबर को अपने अज़ीज़ों
के मरने का इतना रंज हुआ। कि आख़िर बीमारी ने उस के
बदन में घर किया। भूख बिल्कुल जाती रही। दस दिन
तक सिवाय पलंग पर लेटे रहने के और किसी काम की ता-
क़त न रही। आख़िर वक़्त में सलीम मौजूद था अकबर ने
हुक्म दिया कि मेरे सब अमीरों को यहां हाज़िर करो। मैं
नहीं चाहता कि जिन लोगों ने जन्म भर मेरी ख़िदमत की
अब किसी तरह पर तुमारे साथ उनकी नाइत्तिफ़ाक़ी हो।
जब सब अमीर हाज़िर हुए बहुत सी पंद और नसीहत
करने के बाद सब की तरफ़ देखकर कहा भाइयो अगर मैंने
कुछ क़सूर किया हो मुआफ़ कीजियो सलीम से न रहा गया
पैरों पर गिर पड़ा। और ढाढ़ मारकर रोने लगा। अकबर ने
अपनी तलवार की तरफ़ इशारा किया। और कहा कि मेरे
सामने अपनी कमर पर बांधो और फिर एक बड़े मुल्ला को
बुलाकर उस के सामने मुसल्मानों का कलिमा पढ़ते पढ़ते इस
ना पायदार दुन्या से कूच किया *।

आगरे को बयाने के तहत से निकालकर सिकंदर लोदी ने
अपना पायतख़्त बनाया था। लेकिन रौनक़ उसे अकबर ने दी इसी
लिये वह अकबराबाद कहलाया। क़िला उस में लाल पत्थर का
अकबर ही का बनाया है इलाहाबाद भी अकबर ने बसाया और

---

* تاریخ رحلت اکبر فوت اکبر شد سنه ۱۰۱۴ هجری

जहां गंगा जमना के संगम पर क़िला बनाया । अंगरेज़ों ने अब उसे बहुत मज़बूत कर लिया ।

अकबर साल में छः महीने से ऊपर गोश्त नहीं खाता था । उस के दर्बार में सदा गंगाजल पीया जाता था । गावकुशी की मनाही थी । रात दिन में तीन घंटे से ज़ियादा कभी नहीं सोता था इतनी लड़ाइयां लड़ने और ऐसे बड़े बड़े काम करने पर भी वक़्त जैसा चाहिये बांट देने से और काम के निबाह की तर्कीब जानने से उसे पढ़ने लिखने और खेल तमाशा देखने को भी बहुत फ़ुर्सत मिला करती थी । वह पंदरह बीस कोस बख़ूबी पैदल चल सकता था । एक बार ख़ाली अपने शौक़ से दो दिन में घोड़े की डाक पर २२० मील अजमेर से आगरे चला आया । बरसात के मौसिम में अहमदाबाद से ख़बर पहुंची कि दुश्मनों ने क़िले को चालीस हज़ार फ़ौज से घेर लिया और अब उस के बचने की कुछ उमेद नहीं है अकबर उस वक़्त आगरे में था । इतनी दूर से ऐसे मौसिम में फ़ौज का रवाना करना निरा बे फ़ाइदा था । फ़ौरन् सांड़नी पर सवार हो बैठा । और तीन सौ सांड़नियों पर जो उस वक़्त शुतरख़ाने में मौजूद थीं सर्दारों को तीर कमान बंधवाकर साथ सवार कर लिया एक अठवाड़े में २०५ कोस चल कर अहमदाबाद के सामने डंका जा बजाया । बादशाही निशान देखते ही दुश्मनों का होश उड़ गया । बहुतेरा हाथ पैर पीटा पर सिवाय मरने और भागने के कुछ भी न बन पड़ा । आपस में सलाम का क़ाइदा अकबर ने बिलकुल बदल दिया था " सलाम अलैकुम " के बदले एक कहता था " अल्लाहु अकबर " दूसरा जवाब देता था " जल्लजलालुहु " बात इस में यह थी कि अकबर और जलाल दोनों उस बादशाह का नाम था । बादशाह के सामने सब को ज़मीन चूमने का हुक्म था । मुसल्मानों को इस तरह की बातें बहुत बुरी लगती थीं क्योंकि " सलाम अलैकुम " उन के मज़्हब का हुक्म है । और आदमी के सामने ज़मीन पर गिरना बिलकुल उन के मज़्हब

के ख़िलाफ़ है । अकबर ने बहुत से आईन रअय्यत के निहायत फ़ाइदे के जारी किये थे उसने गोला उठाना और जलते तेल में हाथ डालना ऐसी क़सूमों पर मुक़द्दमों का फ़ैसल होना बिल्कुल बंद कर दिया था । होश संभालने से पहले लड़का लड़की दोनों का ब्याह मना था । दूसरा ब्याह करने की हिंदू बेवाओं को भी परवानगी थी । बिना अपनी पूरी रज़ामंदी के किसी की ज़बर्दस्ती से कभी कोई सती नहीं होने पाती थी । जिज़्या का महसूल उस ने यक़क़लम मौक़ूफ़ कर दिया क्योंकि हिंदू और मुसल्मान उस के नज़्दीक दोनों बराबर थे । यात्रियों से महसूल लेना भी बिल्कुल बंद किया क्योंकि सब लोग अपने अपने मज़्हब के मुताबिक़ उसी एक निराकार जगदीश्वर की पूजा करते थे । शहर के बाहर दो मकान बनवा दिये । जिस मकान का नाम धर्मपुर था उस में हिंदू साधु संत और जिस का नाम ख़ैरपुर था उस में मुसल्मान फ़क़ीर नित खाने को पाते थे । ज़मीन की पैदावार से अकबर कुल एक तिहाई लेता था । और लड़ाई के क़ैदियों को लौंडी गुलाम बनाने का दस्तूर बिल्कुल उठा दिया था । अकबर के दख़ल में हिंदुस्तान के १८ सूबे थे । उस के लश्कर के डेरे ५ मील के फैलाव में खड़े होते थे । सालगिरह के रोज़ बड़ी धूम धाम से तय्यारी होती थी । इंगलिस्तान की मलिका एलि-ज़बेथ की चिट्ठी लेकर फ़िच साहिब जो उस के दर्बार में आये थे लिखते हैं कि ऐसी दौलत हम ने कभी आंख से नहीं देखी । सोने की तुला पर सोने और फिर चांदी और फिर और चीज़ों से बादशाह तुलता था । और वह सब उसी जगह लुटा दिया जाता था । बादशाह लोगों को इनाम भी बहुत देता था । और सोने चांदी के बादाम दर्बारियों पर फेंकता था । उस के दर्बारी सब सिर पर कलग़ियां बांधते थे । और उन्हीं फ़िच साहिब के लिखने बमूजिब ऐसा आसमान तारों से चमकता है वे हीरों से चमकते थे ।

पांच हज़ार उस के फ़ीलख़ाने में हाथी थे। और बारह हज़ार इस्तबल में ख़ासे के घोड़े। उन के साज़ देखने से आंखें चौंधियाती थीं। और सवारी के बदन पर कमख़ाब की वर्दियां जगमगाती थीं। पर तो भी अकबर निहायत सीधा सादा था। अकबर तख़्त के नीचे बैठ कर और कभी खड़ा भी रह कर अपनी रअय्यत का इंसाफ़ करता था। उस के नेक मिज़ाजी की हम कहां तक तारीफ़ लिखें एक दफ़ा सवारी में किसी ने अकबर पर एक तीर चला दिया। और वह आकर उस के कंधे में लगा। मुजरिम पकड़ा गया लोगों ने अर्ज़ की कि अभी इस को क़तल न होने दीजिये तो इस से उस असल मुजरिम का नाम मालूम करें जिस के कहने से इस ने ऐसे काम का हियाव किया। अकबर ने कहा कि इस को धमकाने से असल मुजरिम के बदले किसी बेगुनाह के फंसजाने का डर है और उसे उसी दम क़तल होने दिया।

एक मर्तबा अकबर जब लड़ाई में जाने के लिये पोशाक पहन रहा था देखा किसी राजा का लड़का अपने डील डौल से ज़ियादा ज़िरह बकतर पहने साथ चलने को तय्यार है। और उस के बोझ से दबा जाता है। बादशाह ने उस की उमर मुवाफ़िक़ एक हलका सा ज़िरह बकतर अपने तोशेख़ाने से मंगवा दिया। और जब उस ने वह भारी अपने बदन से उतारा एक दूसरे राजा को जो वे ज़िरह बकतर थो पहन लेने का इशारा किया। लेकिन यह राजा उस लड़के के बाप से कुछ दुशमनी रखता था इस सबब लड़के को बहुत बुरा लगा अकबर का दिया हुआ ज़िरह बकतर तुर्त उतार कर फेंक दिया। और कहा कि मैं लड़ाई में बे ज़िरह बकतर ही जाऊंगा। अकबर ने इस बेअदबी पर ज़रा भी ख़याल न किया। और ख़ाली इतना ही बोला कि तब आज हम भी ज़िरह बकतर न पहनें। क्योंकि हम को यह मुनासिब नहीं कि अपने सर्दारों को अपने से ज़ियादा ख़तरे में पड़ने दें।

बाबा तुलसीदास * इसी के ज़माने में हुए। जो ऐसी अच्छी भाषा रामायन बना गये॥

नूरुद्दीन मुहम्मद जहांगीर

نورالدین محمد جہانگیر

अकबर के बाद सलीम तख़्त पर बैठा। और लक़ब अपना जहांगीर रक्खा॥ अकबर महसूल जिन से रय्यत को तकलीफ़ पहुंचती थी और अकबर के वक़्त में भी जारी रह गये थे। बंद कर दिये॥ हुक्म दिया कि कूच के वक़्त कोई सिपाही या बादशाही नौकर ज़बर्दस्ती किसी रय्यत के घर में न उतरे नाक कान काटने की सज़ा भी जहांगीर ने मौक़ूफ़ की। आप जैसी शराब पीता था यह तो मालूम है पर औरों को सख़्त मनाही थी॥ अपने रहने के महलों में एक ज़ंजीर सोने की घंटियां बांधकर लगा दी थी और उस ज़ंजीर का दूसरा सिरा क़िले के बाहर लटकवा दिया था। कि फ़र्यादी को अगर कोई चपरासी चोबदार बादशाह तक न पहुंचने दे तो वह उस ज़ंजीर को हिला दे जहांगीर घंटियां बजते ही बाहर निकल आता था॥ लेकिन इन सब अच्छे कामों से यह न समझना चाहिये कि जहांगीर का दिल भी अकबर का सा नर्म था जब इस का बड़ा बेटा ख़ुसरव इस से बिगड़कर काबुल की तरफ़ भागा। और झेलम में नाव अटक जाने के सबब पकड़ा आया॥
जहांगीर ने उस के साथियों में से सात सौ आदमियों की खाल १६०६ ई०
खिंचवाकर कर उन्हें लाहोर के बाहर खड़ा करवा दिया। और ख़ुसरव को हाथी पर बिठलाकर उन्हें देखने के लिये भिजवाया और नक़ीब को हुक्म दे दिया कि एक एक का नाम लेकर मामूल मुताबिक़ "निगाह रूबरू" पुकारता जावे ख़ुसरव ने तीन दिन तक कुछ न खाया और रोया और कराहा किया॥

---

* संवत सोरह से असी असी गंग के तीर।
सावन शुक्ला सत्तमी तुलसी तज्यो सरीर॥

कोई २ "सावन स्यामा तीज को" ऐसा भी कहते हैं और इसी दिन उनकी बरसी मानते हैं॥

१६११ ई० तख़्त पर बैठने के छ बरस बाद जहांगीर ने नूरजहां के साथ निकाह किया। नूरजहां का दादा ऐरान में बड़े दर्जे का आदमी था लेकिन उस का बाप मिर्ज़ा ग़यास ऐसा ग़रीब हो गया कि उसे रोज़गार की तलाश में हिंदुस्तान की तरफ़ आना पड़ा और क़ंदहार में जब नूरजहां पैदा हुई उस ने उसे सड़क पर फेंक दिया॥ क़ाफ़िलेवालों ने रहम खाकर उठा लिया। और उसी की मा को उस की धाय मुक़र्रर कर दिया॥ उस के बाप से भी क़ाफ़िलेवाले काम काज लेने लगे और फिर होते होते वह बादशाह के यहां नौकरी पा गया अपनी मा के साथ जब नूरजहां अकबर के महल में जाती। वहां जहांगीर की भी उस पर आंख पड़ती॥ जब जहांगीर उस से छेड़ छाड़ करने लगा और इस का चरचा अकबर तक पहुंचा अकबर ने उस के बाप से कहके उसका निकाह शेर अफ़गनख़ां से कि जिसके साथ मंसूब हो चुकी थी करा दिया। जहांगीर जब तख़्त पर बैठा नूरजहां की याद ने उसे बेचैन किया॥ शेरअफ़गनख़ां को अकबर ने बंगाले में जागीर दी थी जहांगीर ने बंगाले के सूबेदार को लिखा कि जिस तरह से बने नूरजहां को शेरअफ़गन से लेकर भेज दो सूबेदार का समझाना शेरअफ़गन ने कुछ भी न माना। और जब सूबेदार ने धमकाना शुरू किया शेरअफ़गन ने उस पर हथियार चलाया॥ सूबेदार के मरते ही उस के नौकरों ने शेरअफ़गन को टुकड़े टुकड़े करडाला और नूरजहां को पकड़ कर जहांगीर के पास भेज दिया। पहले तो जहांगीर ने उस के साथ बड़ी धूमधाम से ब्याह किया और फिर ख़ाली नाम को आप बादशाह रहा हक़ीक़त में सारा काम बादशाही का उसी के हवाले कर दिया॥ बादशाही क्या वह तो जहांगीर की भी मालिक थी। और अक़्लमंद ऐसी कि उस से भी अच्छी सल्तनत करती थी॥ सिक्के पर भी जहांगीर के साथ उस का नाम रहता था। और बे उस के एक दम जहांगीर को आराम न था॥

जहांगीर ने कुछ फ़ौज शाहज़ादे ख़ुर्रम यानी शाहजहां के साथ उदयपुर को भेजी थी। लेकिन राना शाहजहां के पास हाज़िर हो गया इस लिये शाहजहां ने उस की बहुत ख़ातिर की। अकबर की चढ़ाई से जो कुछ उस का मुल्क बादशाही क़ब्ज़े में आ गया था वह भी छोड़ दिया। और राना के लड़के को दिल्ली ला कर अपने बाप जहांगीर से बड़ा दर्जा दिलाया॥ १६१४ ई०

शाहजहां को जहांगीर ने बहुत सी फ़ौज दे कर दखन की मुहिम्म पर रवाना किया। और आप भी उसकी मदद के इरादे पर मांडू तक आया॥ इंगलिस्तान के बादशाह पहले जेम्स के एलची सर टामस रो साहिब बादशाह के साथ थे। लिखते हैं कि बार बर्दारी न मिलने के सबब हम और ईरान के बादशाह का एलची दोनों कुछ दिन तक अजमेर में पड़े रहे॥ और बादशाह को भी अपनी फ़ौज का बहुत सा डेरा डंडा जलवा देना पड़ा। नहीं तो उन का भी कूच होना मुश्किल था॥ वही साहिब लिखते हैं कि जहांगीर फ़रंगियों की बड़ी ख़ातिर करता है रअय्यत हिंदी बोलती है। पर दर्बार में फ़ारसी बोली जाती है॥ मैं ने बादशाह को एक उमदा विलायती गाड़ी और तस्वीर दी थी बादशाही कारीगरों ने थोड़े ही दिनों में उस से बिहतर गाड़ी बनाली। और तस्वीर की तो ऐसी नक़ल उतारी कि मुझको असल से नक़ल जुदा करनी मुश्किल पड़ गयी॥ १६१६ ई०

शाहजहां जल्द ही फ़तह फ़ीरोज़ी के साथ दखन की मुहिम्म ख़तम कर के अपने बाप के पास हाज़िर हो गया। और फिर थोड़े ही दिनों पीछे कांगड़े का नामी क़िला जहांगीर के क़ब्ज़े में आया॥

शाहजहां को नूरजहां की भतीजी ब्याही थी। इस लिये वह अब तक शाहजहां की तरफ़दार थी॥ लेकिन अब उसने अपनी बेटी को जो शेरअफ़गन के घर में हुई थी। जहांगीर के छोटे लड़के शहर्यार को ब्याह दी॥ और इस फ़िक्र में पड़ी

कि शाहजहां को ख़राब करके जहांगीर के बाद शहर्यार को तख़्त पर बिठावे निदान जब शाहजहां को यह बात मालूम हुई और उस ने देखा कि नूरजहां ने मेरे बाप का दिल मेरी तरफ़ से फेर दिया न मुझ को बाप के पास आने देती है। और न यहां दखन में रहने देती है॥ जागीरें मेरी जो थीं ज़ब्त होकर शहर्यार को मिल गयीं और फ़ौज भी जो मेरे तहत में है अब शहर्यार को मिला चाहती है डंका बग़ावत का बजाया। और मांडू से आगरे की तरफ़ रवाना हुआ॥ लेकिन जब क़रीब पहुंचा और बादशाही फ़ौज इस के मुक़ाबले को आयी यह हट कर फिर मांडू की तरफ़ रवाना हुआ॥ बादशाही फ़ौज ने वहां भी उस का पीछा किया॥ शाहजहां तिलंग देस यानी तिलंगाने की तरफ़ भागा। और फिर मछलीबंदर होता हुआ पूरब में आकर बंगाला और बिहार अपने क़ब्ज़े में किया॥ लेकिन जब ज़मीदारों से मदद न मिलने के सबब इस तरफ़ भी उस ने बादशाही फ़ौज से शिकस्त खायी फिर दखन की तरफ़ भागा। और आख़िर थक कर अपने बाप को अर्ज़ी लिखी कि अब मेरा क़ुसूर मुआफ़ हो बहुत सज़ा पा चुका॥ वहां से हुकुम आया कि दाराशिकोह और औरंगज़ेब अपने दोनों लड़कों को हाज़िर रहने के लिये दर्बार में भेज दो। और फिर कभी ऐसा काम मत करो॥ शाहजहां ने कुछ उज़्र न किया और फ़ौरन अपने दोनों लड़कों को बादशाह के पास भेज दिया॥

१६२६ ई० इसी अर्से में क्या जानिये नूरजहां को क्या सूझा। महाबतख़ां को बंगाले की सूबेदारी का हिसाब समझाने के लिये बुला भेजा॥ महाबतख़ां आया। लेकिन पांच हज़ार राजपूतों को साथ लेता आया॥ बादशाह के पास हाज़िर होने से पहले बिना बादशाह की परवानगी उस ने अपनी बेटी एक जवान सर्दार बर्ख़ुर्दार को ब्याह दी। जहांगीर को यह बात बहुत बुरी लगी॥ बर्ख़ुर्दार को बुलाकर उस की नंगी पीठ पर कोड़े लगवाये और घरबार उस का बिलकुल ज़ब्त कर लिया। जब महाबतख़ां पास पहुंचा जहांगीर काबुल को जाता था झेलम